आगरा व फ़तेहपुर सीकरी के ऐतिहासिक भवन

देवीदयाल माथुर
(भारत सरकार के पुरातत्व विभाग से निवृत्ति प्राप्त)

प्रकाशक:
सर्वोदय प्रकाशन, देहली

आगरा व फ़तेहपुर सीकरी के ऐतिहासिक भवन

देवीदयाल माथुर
(भारत सरकार के पुरातत्व विभाग से निवृत्ति प्राप्त)

प्रकाशक:
सर्वोदय प्रकाशन, देहली

प्राक्कथन

●

यह पुस्तिका 'दिल्ली का अतीत' (रिवीलिंग डेल्हीज़ पास्ट) और 'मथुरा, भारतीय संस्कृति व कला के लिए इसका महत्त्व' नामक पुस्तकों की सहायक पुस्तिका है। इसके लिखने का उद्देश्य उन लोगों को सहायता देना है, जो आगरा और फ़तेहपुर सीकरी के प्राचीन भवनों के रूप में विद्यमान भारत की राष्ट्रीय संपत्ति का भली प्रकार ज्ञान प्राप्त करना चाहते हों।

अधिक गहराई के साथ परीक्षा करने पर मालूम करना होगा कि इन स्थानों में पाए जाने वाले स्मारक चिह्न अलभ्य गरिमा तथा सौंदर्य के कोष हैं। पीढ़ियों से उत्तराधिकार में मिलने वाले ये चिह्न महान् मुग़लों के द्वारा पोषित भारतीय स्थापत्य-कला तथा संस्कृति के विकास को प्रकट करते हैं। ये भवन दैव की महिमा को बखानते हैं और महाननाओं के स्मारक हैं। ऊंचे आदर्शवाद और आध्यात्मिक चेतना की छाप इनके ऊपर स्पष्ट है और प्राय: ही इन्हें देख कर किसी गीतकाव्य की कोमल आकृति व गरिमा का आभास मिलता है।

लेखक का विचार है कि भारतीय कला तथा स्थापत्य का योगधन सम्पूर्ण राष्ट्र का सम्मिलित उत्तराधिकार है। राष्ट्रीय स्वाधीनता की सुरक्षा से संबद्ध इस उत्तराधिकार की नवीन भारत रक्षा करेगा, और वह आशा करता है कि उसके गौरवपूर्ण अतीत के सभी प्रशंसक इस काम में उसे पूर्ण सहयोग देंगे।

स्थापत्य-कार्य के इन दो केन्द्रों में स्थापित भवनों में भारतीय संस्कृति की प्रतिच्छाया मिलती है। धार्मिक जातीयता के आधार पर चाहे हमारे देश का भौगोलिक विभाजन भले हो गया हो, किंतु हम अपनी संस्कृति, अपनी भाषा, और अपने साहित्य का विभाजन नहीं कर सकते। हम इस बात को जानते है कि सांस्कृतिक विभाजन राजनीतिक विभाजन की अपेक्षा कहीं अधिक विनाशकारी सिद्ध होगा और हमारी समान संस्कृति तथा जीवन पर घातक प्रभाव डालेगा।

इस विवरण को तैयार करने में मुझे श्री बी० एस० सिथोले तथा प्रोफ़ेसर मुहम्मद मुजीब से अत्यंत मूल्यवान सम्मतियां प्राप्त हुई हैं। मुझे पुरातत्त्व-विभाग के अधिकारियों को भी धन्यवाद देना चाहिए, जिन्होंने इन विभाग की संपत्ति के अंतर्गत चित्रों तथा नक्शों आदि को इस पुस्तिका में छापने की अनुमति दी।

—देवीदयाल माथुर

AKBAR—The builder of Fatehpur Sikri

अकबर—फतेहपुर सीकरी का निर्माता

ऐतिहासिक परिचय

इतिहास के माध्यमिक काल में, उस समय की सभ्यता के आसन तथा केन्द्र होने के कारण, आगरा व दिल्ली भारत के हृदय थे। वे हिन्दू-मुस्लिम-संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाली स्थापत्य-कला के दृष्टि-कोण से सब से अधिक समृद्ध हैं, और प्राचीनता, सौंदर्य तथा ऐतिहासिक रुचि से पूर्ण हैं।

जिस जमना नदी को लेकर इतनी लोककथाएं प्रचलित हैं, उसी के किनारे पर बसे हुए ये दोनों नगर एक दूसरे से सौ मील से कुछ ही अधिक अन्तर पर है। दोनों ही में वे सुन्दर भवन हमारे लिए सुरक्षित हैं, जो अपनी स्थापत्य-कला, सादगी और सुरुचिपूर्ण प्रणाली के लिए प्रसिद्ध हैं। प्रेरणा से भरे हुए कलाकारों और निर्माताओं ने अपने प्यारे हाथों से आगरा में ताजमहल का निर्माण किया। हिन्दू-मुस्लिम कला ने भारत को एक ऐसा सांस्कृतिक स्थायित्व प्रदान किया है, जो शताब्दियों से अटूट चला आ रहा है।

हिन्दू लोककथाओं के अनुसार कहा जाता है कि आगरा वह क्षेत्र है जहाँ हमारे गौरवपूर्ण अतीत के यथार्थ विश्वकोश महाभारत के रचयिता, प्रसिद्ध ऋषि वेदव्यास का जन्म हुआ था। वह कवि होने के साथ-साथ शिक्षक भी थे। परशुराम के रूप में विष्णु भगवान के अवतार लेने का स्थान माने जाने के कारण आगरा के प्रति हिन्दुओं की अगाध श्रद्धा है।

श्रीकृष्ण के पवित्र बृजमंडल के अनेक क्षेत्रों में से आगरा प्रथम था और कहा जाता है कि यहीं पर वह दैवी ग्वाला अपनी बन्सी बजाता हुआ उस अपूर्व संगीत की रचना करता हुआ विचरण किया करता था, जो सभी सुनने वालों को आकर्षित व मोहित कर लेता था। जिले में स्थित कुछ प्राचीन निवास-स्थानों के अवशेषों से आगरा की प्राचीनता की साक्षी मिलती है, बटेश्वर, जिसे सूरजपुर के नाम से भी पुकारते हैं, राजा शूरसेन के द्वारा बसाया गया था। जनरल कनिंघम ने राजा शूरसेन को अयोध्या के सूर्यवंशीय शासन के सर्वेसर्वा श्री रामचन्द्र का भतीजा बताया है। इसके मन्दिरों के खंडहरों में पत्थर की प्रतिमाएं मिली हैं और एतमादपुर तथा चम्बल नदी के किनारे वाले स्थानों में बौद्धकाल की रचनाओं के अवशेष पाए गए हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं कि इसी प्रकार के प्राचीन स्थान कभी उन शक्तिशाली राज्यों के भाग रहे हैं, जिनकी राजधानी मथुरा थी। कहा जाता है कि सन् १०२२ में सुलतान महमूद ने आगरा पर आक्रमण किया और इस सीमा तक उसको लूटा और उसका विनाश किया कि उसने एक महत्वहीन गांव का रूप ले लिया, महमूद के पलायन के बाद उस समय तक वह फिर हिन्दुओं के अधिकार में रहा, जब तक कि पठान राजाओं का उदय हुआ। गुलाम, खिल्जी, तुगलक, तथा सैयदों के शासन के आधीन रहते हुए कभी तो इस पर आक्रमणकारियों का अधिकार होता रहा और कभी यह अर्द्धस्वाधीनता का उपभोग करता रहा। आगरा में बादलगढ़ का किला सिकन्दर लोदी के सम्मुख नत हो गया और उसने १५०५ में इसके निकट एक अन्य राजधानी का निर्माण किया, जिसे मेहतर मुल्ला खां के अनुसार 'आगेराह' कहा जाता था। आगे चल कर इसे एक अलग जिले का रूप दे दिया गया, जो उन ५२ जिलों में से एक था। जो बयाना के क्षेत्र के अन्तर्गत थे।

धीरे धीरे इस स्थान का महत्व बढ़ता गया और सुलतान ने आज्ञा दी कि बादलगढ़ के किले का पुनर्निर्माण किया जाए। जमना के पूर्वी किनारे पर सुलतान का महल बनाया गया और सन् १५२६ में पानीपत की विजय के पश्चात् मुगल बादशाह बाबर ने उस पर अधिकार कर लिया। आधुनिक नगर की दूसरी तरफ उसकी स्थापना के चिह्न अब भी मिलते हैं।

५ जुलाई १५०५ को आगरा एक भयानक भूडोल से पीड़ित हुआ। भूडोल का धक्का इतना भीषण था कि गर्वोन्नत भवन भूमि पर बिछ गए और उनके हजारों निवासी मलबे के नीचे दब गए। सिकन्दर लोदी ग्वालियर पर आक्रमण की तैयारी कर रहा था कि अचानक वह रोग से ग्रस्त हो गया और काल का ग्रास बन गया। कहा जाता है कि उसी ने सिकन्दरा की स्थापना की, जो अब गौरवशाली अकबर बादशाह का मकबरा है, और यह भी कि उसने वहाँ पर एक ग्रीष्मभवन बनवाया जो बाद में चल कर उसकी बेगम मरियम ज़मानी का अन्तिम विश्रामस्थल बना।

सिकन्दर लोदी एक सफल विद्वान, भाषा का पंडित, कुशल सेनानायक और सफलताप्राप्त शासक था।

उसके पुत्र इब्राहीम लोदी ने अपना किला आगरे में ही बनाए रखा, अपने भाइयों को पराजित किया, उन्हें हांसी के किले में कैद किया और आगे चलकर उन्हें मार ही डाला। क्रूरता की प्रवृत्ति रखने के कारण, उसने समस्त सभासदों तथा सम्मानित व्यक्तियों को विद्रोही बना दिया और यह अवस्था उस समय तक बनी रही, जबकि बाबर ने आकर उसके अत्याचारी शासन का अन्त ही न कर दिया।

बाबर ने इब्राहीम लोदी को १५२६ ईसवी में पानीपत में हराया। इब्राहीम लोदी के महलों में प्रवेश करते समय विजेता के पुत्र हुमायूं को अत्यन्त मूल्यवान हीरे जवाहरात भेंट किए गए, जिनमें प्रसिद्ध हीरा कोहनूर भी सम्मिलित था। यह हीरा ग्वालियर के राजा के अधिकार में आया था, जिसने पानीपत को कूच करते समय अपने परिवार को आगरा में ही छोड़ दिया। उसके परिवारजन हुमायूं के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ थे, जिसने उनके साथ सौजन्यता का व्यवहार किया और उन्हें लूट से बचाया था।

बाबर ने आगरा को अपना निवास-स्थान बनाया और उसने वहां के देहाती क्षेत्रों को सुन्दर क्रीड़ा क्षेत्रों के रूप में बदल दिया। समरकंद के ठन्डे स्थानों से आने के कारण आगरा के मैदानों की गरमी, धूल और भारी मौसमी हवाएं बाबर को असहनीय प्रतीत हुई और उसने तुरन्त स्नानागारों तथा अन्य शीतोत्पादक साधनों के निर्माण का काम हाथ में ले लिया। वह कला और साहित्य से प्रेम रखता था और स्वयं भी कवि था। फूलों और बागों के लिए उसके हृदय में तीव्र अनुराग था अपने तमाम भयानक तथा साहसपूर्ण कारनामों के बीच उसने उच्च कलाओं के प्रति अपने गहन प्रेम को सुरक्षित रखा था। उसने यह रुचि अपने एक दूर के पूर्वज तैमूर से पाई थी, जो यद्यपि क्रूरता के अवगुणों से दूषित था, नगर के नगर बरबाद कर देता था और सामूहिक हत्याकांड करवाता था किन्तु फिर भी कलाकारों को क्षमा कर देता था। इस रुचि को बाबर ने अपने वंशजों में भी उतारा और उन्होंने भी उत्तरी भारत में कला और स्थापत्य के अद्भुत नमूने छोड़े हैं।

इस देश में पैर जमाने में बाबर को भीषण विरोधों का सामना करना पड़ा। फतहपुर सीकरी के निकट उसे उन वीर राजपूतों के साथ एक कठोर युद्ध लडना पड़ा, जो अपने सरदार चित्तौडगढ़ के राणा

सांगा के झन्डे के नीचे एकत्र हुए थे। आगे चल कर १५२६ ईसवी में वह उन अफगानों के साथ युद्ध में व्यस्त हो गया, जिनकी अधीनता में बंगाल पहले से ही था। परिणामस्वरूप उन सांस्कृतिक कार्यों के लिए बाबर को कोई अवकाश नहीं मिल सका, जिनसे वह प्रेम रखता था। भारत में आए अभी उसे चार साल ही हुए थे कि उसका देहावसान हो गया। उसके चरित्र की सौजन्यता उसकी मृत्यु में भी उतनी ही दर्शनीय थी, जितनी उसके जीवन में रही थी। वह अपने पुत्र हुमायूं से अत्यन्त प्रेम करता था, अपने संभल के इलाके में निवास करते समय हुमायूं मलेरिया से ग्रस्त हो गया। बाबर उसे आगरा में अपने बागमहल में ले आया और उसकी चिकित्सा करने के लिए तमाम कुशल चिकित्सकों को एकत्र किया। जब हुमायूं के बचने की कोई आशा शेष नहीं रह गई तो किसी ने सम्मति दी कि खतरे को टालने के लिए कुरबानी की आवश्यकता है। उसके सभासदों ने सलाह दी कि सबसे अधिक मूल्यवान हीरे कोहनूर को दान में दे देना चाहिए, किन्तु बाबर ने इसका यह कह कर विरोध किया कि उसके जीवन में जितनी भी वस्तुएं थीं उन सब में हुमायूं सबसे अधिक प्रिय था, और उसने घोषणा की कि वह अपने बेटे के ऊपर स्वयं अपने को ही कुरबान करेगा, वह हुमायूं के पलंग के चारों ओर गम्भीरता के साथ परिक्रमा देने लगा. जैसे वास्तव मे धार्मिक बलि दे रहा हो, और इसके बाद ईश्वर प्रार्थना में रत हो गया, शीघ्र ही उसे यह कहते सुना गया। "मैंने उसे ले लिया है...मैंने उसे ले लिया है"। हुमायूं तो अच्छा हो गया, किन्तु बाबर बिस्तर पर पड़ गया। जब उसका देहान्त हो गया तो उसके अवशेष काबुल ले जाए गए, जहां एक बाग में, "निकटस्थ स्थानों की अपेक्षा मधुरतम स्थान में" उसने अपना मकबरा बनाए जाने की इच्छा व्यक्त की थी।

आगरा में बाबर ने बाग लगवाए थे, महल, स्नानागार, जलाशय तथा कुएं और जलमार्ग बनवाए थे, किन्तु उसकी लड़की के द्वारा रोपे हुए राम बाग और जोहरा बाग के अतिरिक्त उनमें से कोई भी बाकी नहीं बचा। ताज के सामने उसके द्वारा निर्मित नगर की नीवों के चिह्न मिलते हैं। बाबर ने ही उस बड़ी सड़क की योजना बनाई और उसके उत्तराधिकारियों ने उसे पूर्ण किया, जो आगरा से लाहौर को होती हुई काबुल को जाती थी और जिसके कुछ भाग अब भी बचे हुए हैं। उसने सराय आदि का निर्माण भी कराया था, लेकिन अब उनके कोई चिह्न नहीं मिलते उसने अपने लिए एक शानदार महल बनाने के लिए कुस्तुन्तुनिया से एक प्रसिद्ध भवननिर्माता को भी बुलवाया था। ये वे दिन थे, जब महान् सुलेमान कुस्तुन्तुनिया में भवन-निर्माण का कार्य करा रहा था। प्रसिद्ध तुर्की भवननिर्माता सिनान बे ने अपने प्रिय शिष्य यूसुफ को हिन्दुस्तान भेजा, फिर भी आगरा में या उसके आस पास उसके द्वारा रचित किसी भवन का पता नहीं मिलता।

हुमायूं : दस साल तक १५३० से १५४० तक हुमायूं आगरा में रहा किन्तु लगभग निरन्तर ही रणक्षेत्र में अपनी सेनाओं के साथ रहने में उसे इतना अवकाश नहीं मिल सका कि वह अपनी राजधानी को सजा सकता। मानवों का नेतृत्व करने में, अपने पिता जैसी प्रतिभा के अभाव मे, वह अपने राज्य को संयुक्त रखने में सफल नहीं हो सका। शेरखां सूरी ने, जो एक अफगान सरदार था और जिसने बाबर के सामने झुक कर भी उसके पुत्र के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, कन्नौज से उसे पूर्णतः अस्तव्यस्त कर दिया। इस प्रकार पराजित हो कर वह न केवल हिन्दुस्तान से ही खदेड़ा गया, बल्कि उसे काबुल से भी आगे भागना पड़ा। उसने फारस में जाकर शरण ली, जो उस समय शाह तेहमास्प के अधिकार में था।

शेरशाह सूरी ने अपनी मृत्यु पर्यन्त पांच साल तक शासन किया। उसने शेरशाह की पदवी धारण की। वह भी स्थापत्य-कला का बड़ा प्रेमी था और आगरा में उसके बनाए गए भवनों में से आजकल नाई-की-मंडी में अलावल-बिलावल अथवा शाह विलायत की मस्जिद है।

शेरशाह के बाद उसका बेटा सलीमशाह गद्दी पर बैठा और उसने नौ वर्ष तक शासन किया, उसकी मृत्यु पर उसके सम्बन्धियों में वही परंपरागत झगड़ा उठ खड़ा हुआ और इससे हुमायूं को फिर हिन्दुस्तान में आकर अपनी पूर्व स्थिति प्राप्त करने का अवसर मिल गया। वह १५५५ में फारस की एक सेना के साथ लौटा और पानीपत की लड़ाई में उसने अपने खोए हुए राज्य को पुनः हस्तगत कर लिया। अपने अनुभवसिद्ध सेनापति बैरमखां की सहायता से उसने भारतीय सेनाओं के प्रधान सेनापति हेमू को पराजित किया और दिल्ली व आगरा पर अधिकार कर लिया। फिर भी अपनी विजय का फल उसे चखने का अवसर नहीं मिल सका दिल्ली में अपने महल के एक जीने से गिर जाने के कारण उसका देहान्त हो गया और इस प्रकार विजय के कुछ ही महीनों के बाद उसके शासन का अन्त हो गया।

आगरा में हुमायूं अपना कोई स्मारक नहीं छोड़ गया। दिल्ली में उसकी बेगम के द्वारा उसका एक मकबरा बनवाया गया और वह एक ऐसे नमूने पर बनवाया गया, जिसके बारे में यह मान लिया जा सकता है कि वह आगे चल कर ताजमहल की योजना का आधार बना। फारस और ईरान के साथ राजकीय सम्बन्ध बराबर बने रहे। हुमायूं के मकबरे का निर्माता 'मिराकमिरजा गियास' फारस से ही आया था और बेगम हमीदा बानू के द्वारा अपने पति के लिए एक अपूर्व स्मारक बनाने के लिए नियोजित किया गया था। आगे चल कर शहनशाह अकबर के शासन काल में उस महान मुगल के दरबार में ख्याति और धन की प्राप्ति के उद्देश्य से विद्वानों और कलाकारों की एक बाढ़-सी चढ़ती चली आई, और भारत में एक ऐसी भिन्न स्थापत्य-कला का विकास हुआ, जो फारस की प्रेरणा और हिन्दुओं की देशी कारीगरी का मिश्रण थी। दिल्ली और आगरा सौंदर्य व सौजन्यता से पूर्ण भवनों से छा गए। इनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध ताजमहल है, जो शाहजहाँ के शासनकाल में निर्मित हुआ और जिसके बारे में फ्रांसीसी आलोचक मोश्यो ग्रौसेट ने कहा था कि "यह भारत के शरीर में अवतरित ईरान का हृदय है।" आकर्षण तथा सौंदर्य में यह भवन विश्व भर में अपनी समानता नहीं रखता।

सन् १५५६ में जब हुमायूं का देहान्त हो गया तो सिंहासन ग्रहण करते समय अकबर एक तेरह वर्ष का लड़का ही था। उसने भी आगरा को ही अपनी राजधानी बनाए रखा और सन् १६४० तक यह सरकारी आसन के रूप में बना रहा, और इसके बाद उसके पोते शाहजहां ने राजधानी को दिल्ली में स्थानांतरित कर दिया। आगरा का नाम अकबराबाद पड़ गया और ऐसे ऐसे सुन्दर भवनों का निर्माण वहां पर हुआ जो "हिंदू मुस्लिम स्थापत्य-कला" के नमूने हैं जैसा कि फ्यूहरर ने लिखा है। "कला के अधिकांश, ऊँचे स्मृतिचिह्न मुसलमान विजेताओं के अधीन हिन्दू पाषाणकलाविदों के द्वारा बनाए गए और उन कलाविदों को अपनी कलाप्रवृत्तियों को उसी सीमा तक प्रयुक्त करने की अनुमति प्रदान की गई जहाँ तक उनके द्वारा रचित वस्तुएँ इस्लामी रीति-रिवाजों अथवा एक प्रकार से इस्लामी मान्यताओं को सन्तुष्ट करती थीं"।

अकबर ने प्रेम से प्राप्त लाभ को तलवार के द्वारा मिलने वाले लाभ पर तरजीह दी क्योंकि उसका विश्वास था वे अधिक स्थायी हैं। इस लिए उसने हिन्दू सरदारों और हिन्दू जनता का हृदय जीतने का निश्चय कर लिया। जजिया कर का उठा लिया जाना एक ऐसा कार्य था, जिसने भारतीयों की सहानुभूति जीत लेने में बड़ा भारी और दूरगामी फल दिया। अकबर ने अपने को भारतीयों के साथ एक रूप कर देने का प्रयत्न किया, एक समान जातीयता तथा देश में विद्यमान विभिन्न तत्वों का समन्वय करने के कामों का सम्पादन किया। उसने इस मे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की और भारतीय इतिहास में उसका नाम, उसके कार्यों के उपयुक्त, सम्मान के साथ लिया जाता है। उसने हिन्दू धर्म के प्रति विशाल हृदयता से युक्त सहनशीलता का व्यवहार किया और स्थापत्य में फारसी और हिन्दू विचारों से संयुक्त सज्जा और रचना का प्रयोग किया। उसके भवनों में जीवनशक्ति और मौलिकता के विशेष पुट मिलते हैं और वे मध्यकाल की भारतीय स्थापत्य-कला के कुछ उत्कृष्ट नमूने हैं। चाहे आगरा में उसके बनवाए हुए किले को ले लीजिए, या फतहपुर सीकरी अथवा सिकन्दरा में स्वयं उसके मकबरे को ही ले लीजिए, उनके भवनों के गुणों से उस सौंदर्य और शक्ति से युक्त महानता का परिचय मिलता है, जिस पर उससे सम्बन्धित धरती की स्पष्ट छाप है। उनकी रचनाओं के विचार और प्रतीक अनिवार्य रूप से भारतीय ही मिलेंगे। अकबर ने राजपूतों से जो निकट तथा पारिवारिक सम्बन्ध बनाए उन से उसे पर्याप्त सहायता मिली। उसे भारतीय राष्ट्रीयता का जनक कहा जाता है, और उसके शासनकाल को एक ऐसा स्वर्णिम युग का नाम दिया जाता है, जिसके ऊपर हिन्दू और मुस्लिम समान रूप से गर्व के साथ दृष्टिपात करते हैं। एक बड़ी सीमा तक उसकी प्रेरणा अब भी अपना काम करती है।

हिन्दुस्तान के लिए अकबर की विशुद्ध अनुभूति और जिस देश को उसने अपनी मातृभूमि के रूप में ग्रहण कर लिया था उसके प्रति उसके सम्मान का दिग्दर्शन कराने वाले उस अद्भुत विकास का पता, जो साहित्य, पेंटिंग संगीत और स्थापत्य में हुआ, उस प्रभाव से पता चलता है, जो उसने भारतीय परम्परा व संस्कृति पर छोड़ा। सिकन्दरा के सुन्दर मकबरे मे उस मनुष्य का व्यक्तित्व निरखा जा सकता है। उसकी जीवनी के लेखक, अब्बुलफजल, के शब्दों में उसने "अपने मस्तिष्क तथा मानस के विचारों को चूने और पत्थर की वेशभूषा पहनाई।"

जहाँगीर: अकबर के उत्तराधिकारी जहाँगीर ने अपने पिता की परम्परा को आगे बढ़ाया, परन्तु संभवतः वह शासन में दिलचस्पी रखने की अपेक्षा कला, चित्रकारी, बागों और फूलों में अधिक रुचि रखता था। उसके पास एक उच्च-कला का संग्रहालय था और उसने कश्मीर में श्रीनगर के निकट बाग लगवाए थे। आगरा के किले में, जहाँगीरी महल के भीतर, राज्य द्वारा प्रोत्साहित देशी कारीगरी के वे नमूने स्पष्ट रूप से अपने चिह्न छोड़ गए है, जिन्हें पहचानने में भूल होने की संभावना नहीं है, उसके शासनकाल में आगरा में निर्मित सब से अच्छी इमारत एत्मादुद्दौला का वह मनोहर मकबरा है, जिसे एक सरदार की बेटी, सम्राज्ञी नूरजहाँ ने बनवाया था।

नूरजहाँ भी कलाओं से प्रेम रखती थी और कहा जाता है कि आगरा के महलों में उसका निजी महल, सम्मन बुर्ज उसी की रुचि तथा योजना के आधार पर सजाया गया था। तख्त के पीछे उसकी एक शक्ति थी और सरकारी सिक्कों पर उसका नाम भी अङ्कित होता था। उसकी दानशीलता निःसीम थी।

वह अनाथ लड़कियों को अपने संरक्षण में लेती थी और अपने निजी धन से उनकी शादी के लिए व्यवस्था करती थी।

सन् १६२७ ईसवी में जहाँगीर का देहावसान हो गया और उसे लाहौर के निकट शाहदरा नामक स्थान में, नूरजहाँ के द्वारा बनवाए हुए एक शानदार मकबरे में दफनाया गया। वह स्वयं १६४८ तक जीवित रही और उसे शहंशाह के मकबरे के पास एक तड़क-भड़क से हीन सीधेसादे भवन में दफन किया गया।

जहाँगीरी काल की कुछ ही छोटी-छोटी इमारतें आगरा में ऐसी हैं, जो विशुद्ध रूप से स्थापत्यकला की रुचि के अनुकूल बनी थीं : छीपीटोला सड़क पर अलीवर्दी खान के स्नानागार और कशमीरी बाजार में मौतमिद खान की मस्जिद।

शाहजहाँ : शाहजहां सन् १६४८ ईसवी में सिंहासन पर बैठा, जब उसने अपने पिता जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह किया था, तो पुर्त्तगालियों ने उसके विरुद्ध जहांगीर की सहायता की थी, इसलिए उसने हुगली में उनकी कोठियों को नष्ट करके उसका बदला लिया। अगले वर्ष उसने दक्खिन में फैली हुई अव्यवस्था को दबाने के लिए कूच बोल दिया! प्रजनन काल के निकट होते हुए भी उसकी बेगम मुमताजमहल उसके साथ साथ गई, और बुरहानपुर के निकट एक सैनिक शिविर में, अपने चौदहवें बच्चे को जन्म देने के बाद, वह एक अंतरीय रोग से मरणांतक रूप से ग्रस्त हो गई। उसकी अंतिम इच्छा यह थी कि शाहजहां फिर से विवाह न करे और उसे एक ऐसे मकबरे के भीतर दफ़न किया जाए, जिसकी समानता संसार भर में न मिल सके। शहंशाह, जो एक लंबे समय तक शोक से अभिभूत रहा, अपनी मृत्यु पर्यन्त उसकी स्मृति के प्रति वफ़ादार बना रहा। अपनी प्रिय बेगम की अंतिम इच्छा की पूर्त्ति के लिये उसने जो कार्य किया उसकी साक्षी-स्वरूप आज भी ताजमहल अविचल खड़ा है। उसकी युक्तियुक्त तथा उदार सरकार और बुद्धिमत्तापूर्ण नीति के अंतर्गत उसकी प्रजा समृद्धिशाली हो गई। उसका दरबार गौरव और गरिमा से पूर्ण था। वह समय कला और स्थापत्य के सर्वोन्नत युगों में से एक था। एक अत्यन्त साम्राज्य के साधन उसकी इच्छा पर थे। इसलिए, उसने जो भवन निर्माण कराए उन्होंने आसानी के साथ पूर्व सफलताओं को पीछे छोड़ दिया और वे संसार की अत्युत्तम कलाकृतियों में गिने जाने लगे। आगरा का ताजमहल, दिल्ली की जामा मस्जिद, आगरा की मोती मस्जिद दिल्ली का विशाल महल ये सब सौंदर्य और महानता की दृष्टि से सर्वोच्च हैं। राज्य की शान और शौकत मे शाहजहां ने पिछले तमाम मुग़ल सम्राटों से बाज़ी ले ली। उसका काल सब से अधिक समृद्धि का काल रहा है। उसके शासन के अंतर्गत मुस्लिम गौरव अपने सर्वोच्च शिखर पर जा पहुँचा। ताजमहल तथा अन्य अत्युत्तम भवनों तथा महलों के चकाचौंध कर देने वाले संगमरमर की शान उन यूरोपीय यात्रियों यथा राजदूतों की आंखों को चौंधिया देते थे, जो भारत के साथ व्यापार में सुविधाएं प्राप्त करने के लिए उसके दरबार में आते थे। यह एक स्वर्णिम युग था, भारतीय इतिहास में पथ प्रदर्शक काल था। भारतीय तथा हिन्दू निर्माताओं ने फ़ारसी प्रभाव को आत्मसात् कर लिया था। उन्होंने फ़ारस की दरबारी परंपराओं को अपना लिया था। अकबर के समय से मुग़ल दरबार सभी तरह के विश्वासों और कोई भी नया विचार अथवा नवीन आविष्कार ले कर आने वालों का संगम बन गया था। भारत में हिन्दुओं तथा मुसलमानों की सांस्कृतिक एकता ने प्रगति के क्षेत्र में एक लंबी कुदान ली। मुग़ल सरदारों का तेज़ी के साथ भारतीयकरण हुआ और राजपूत तथा अन्य

Mughal Painting depicting building under construction (Preserved in the Albert and VictoriaMuseum, London).

मुगल कालीन चित्र कला में भवन निर्माण की रूप रेखा (अल्बर्ट और विक्टोरिया संग्रहालय लंदन में सुरक्षित)।
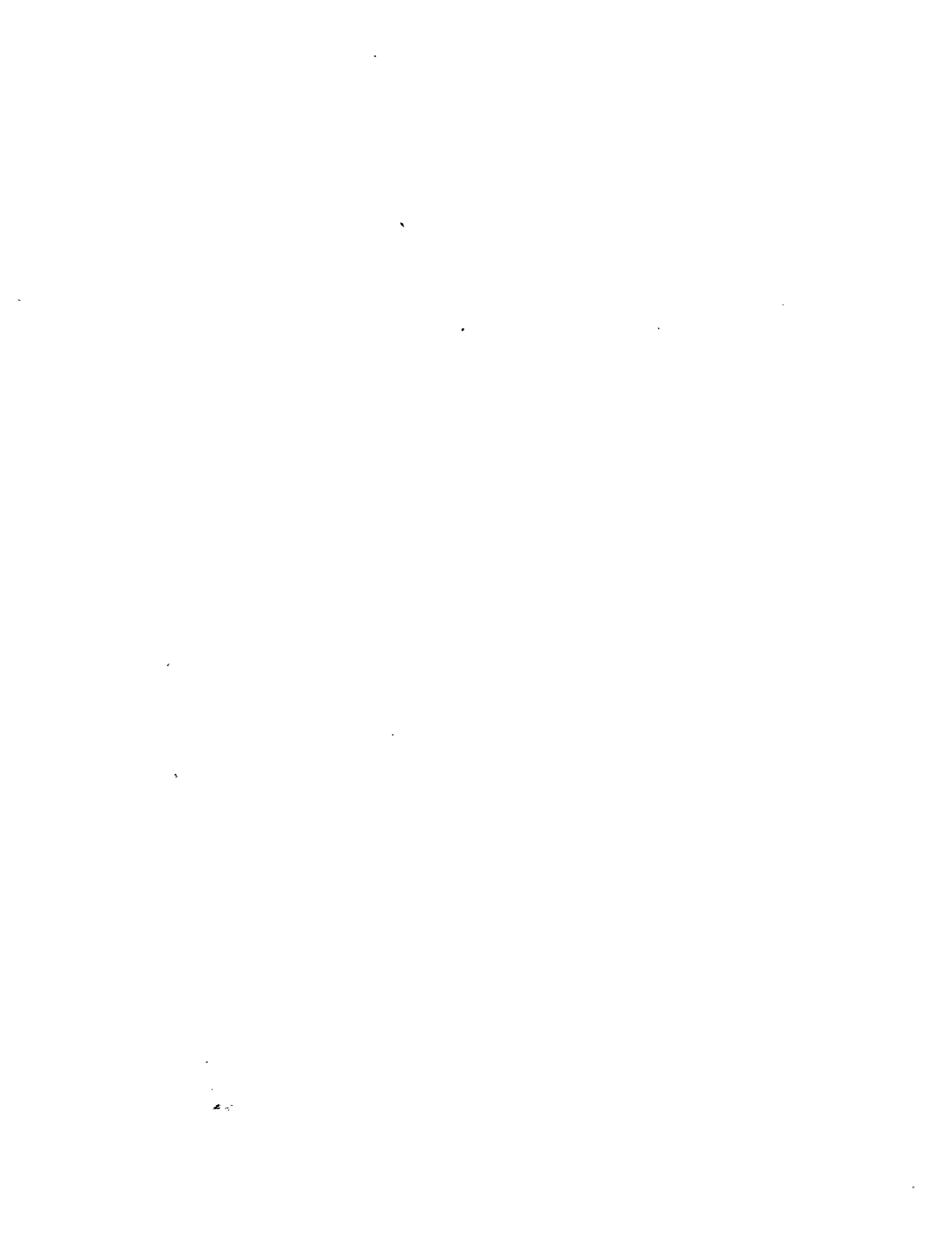
लोगों में फ़ारसी संस्कृति तथा दरबारी रीति-रिवाजों का समावेश हो गया। यह इतिहास के उन मध्यान्तरों में से एक था, जब किसी जाति की संपूर्ण प्रतिभा महान् स्थापत्यसंबंधी कार्यों पर केन्द्रित हो जाती है और कला ही उस युग का सार बन जाती है। इसलिए ताजमहल केवल एक ही कुशल मस्तिष्क की उपज नहीं थी, बल्कि, जैसा कि हेवेल महोदय ने टिप्पणी की है : "वह एक महान् कलायुग की पूर्णता थी।"

शाहजहां सन् १६५८ में बीमार पड़ गया और उसके चारों बेटे आपस में गद्दी के लिये लड़ने लगे। शाहजहां शासन की बागडोर अपने सब से बड़े बेटे दारा शिकोह के हाथों में देना चाहता था। किंतु विधि का कुछ और ही विधान था। उसका तीसरा बेटा औरंगज़ेब, जो एक धार्मिक कट्टरपंथी था, किंतु अन्य भाइयों की अपेक्षा उतना ही अधिक योग्य व शक्तिशाली भी था, सब से तेज़ रहा। उसने अपने पिता शाहजहां को आगरा के किले में कैद कर दिया, जहां कुछ कोठरियों के भीतर ही सीमित रह कर उसने अपने जीवन के शेष सात लंबे वर्ष व्यतीत किए। औरंगज़ेब ने अपने शेष तीनों भाइयों के साथ छल किया और उन में से दो को, एक के पीछे दूसरे को लगा कर, समाप्त कर दिया। शहंशाह की कैद की साथिन बनी उसकी सब से बड़ी बेटी जहांआरा, जबकि बलात् सत्ता प्राप्त करने वाले उसके उत्तराधिकारी ने, उस खतरनाक कैदी के लंबे जीवनकाल से उकताकर, उपेक्षावृत्ति के द्वारा उसके जीवन का अंत लाने में शीघ्रता बरती। आखिर सन् १६६६ में भूतपूर्व शहंशाह अपनी मृत्यु को बुलाने में सफल हो सका। स्वयं औरंगज़ेब इन सात वर्षों में कभी अपने पिता से मिलने के लिए नहीं गया, लेकिन कहा जाता है कि बाद में वह रोया ज़रूर था।

औरंगज़ेब ने दिल्ली के राजसिंहासन पर पांव रखने की घोषणा की, और वहीं पर वह शाहजहां की मृत्यु के बाद दरबार किया करता था। आगरा की गौरवगरिमा बनाए रखने के लिए उसे एक सूबेदार के हाथों में सौंप दिया गया। इस्लाम की आयतों के अनुसार नए बादशाह ने कठोर हाथों और अविचलित न्याय के द्वारा शासन किया। यद्यपि उसके भीतर महान् बौद्धिक शक्तियां, क्रिया शक्ति और साहस था किंतु फिर भी वह कल्पना, सहानुभूति तथा दूरदर्शिता के गुणों से हीन था, और इसी कारण वह उन विभिन्न शक्तियों के विरोध का दमन नहीं कर सका, जो अकबर की नीति के कारण अस्तित्व में आई थी। वे छूट निकली और उन्होंने न केवल मुग़ल साम्राज्य को ललकारा, बल्कि अंत में चल कर उसे नष्ट ही कर दिया। जैसा कि पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा है "उसने घड़ी को उलटी चलाने का प्रयत्न किया और इस कोशिश में उसे रोक दिया और तोड़ डाला।" वह सुन्नी संप्रदाय के धार्मिक नियमों का कट्टर पाबंद था और प्रायः ही यह बात उसे कचोटती थी कि वह चारों ओर से शियाओं तथा हिन्दुओं से घिरा हुआ है, जिनकी सेवाओं पर भरोसा करके वह शासन कर नहीं सकता था। उसने बड़े बड़े कलाविदों को उदार अथवा काफिर बता कर बरखास्त कर दिया, और उसकी पागलपन से पूर्ण आज्ञाओं के द्वारा, बहुत सी गर्वोन्नत इमारतें ज़मीन पर बिछा दी गईं। कारण केवल यह कि वे उस धर्म और विश्वास का उल्लंघन करती थी, जो कला में मानवों तथा पशुओं की आकृतियों का निदर्शन करने से मना करता था। अकबर, जहांगीर और शाहजहां हिन्दू कारीगरों को बिना धार्मिक भेदभाव के स्थान देते रहे थे। औरंगजेब के कट्टरपने ने इस प्रकार के सहयोग का बहिष्कार कर दिया। परिणाम असफलता की सूरत में निकला, जिसका पता स्पष्ट रूप से ताजमहल तथा हैदराबाद राज्य के अंतर्गत औरंगाबाद में शहंशाह औरंगज़ेब की बेगम रबिया दौरानी के मकबरे की पारस्परिक तुलना से भलीभांति चल

जाएगा। यह दूसरा मकबरा केवल नकल है और वह भी अलग से किसी कदर भी बढ़ कर नहीं केवल तीस वर्षों के संक्षिप्त मध्यांतरों में भी, इन दोनों स्मृति चिह्नों के बीच का अंतर विस्मयजनक है। अपने कुछ विशेष गुणों के कारण, जिन्हें सभी लोग प्रशंसा की निगाह से देखते हैं, एक तो संसार भर में अकेला खड़ा है, और दूसरे में बुद्धिहीनता की सीमा तक डिज़ाईन आदि का अभाव है।

औरङ्गजेब की नीति के कारण बहिष्कृत हिन्दू कारीगरों के पास सिवा इसके और कोई चारा ही न रहा कि वे अपने ही धर्म के राजाओं की शरण में जाएँ। फरगूसन महोदय के द्वारा रखा गया यह तथ्य इसी कारण सब से अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है कि जिन इमारतों ने अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ के शासन काल की परम्पराओं को कायम रखा है वे हिन्दू राजाओं के लिए बनाए गए, मध्य भारत तथा राजपूताना के भव्य प्रासाद ही हैं। बुन्देलखण्ड के दतिया और ओरछा नामक स्थानों में बने हुए तथा भरतपुर के डीग नामक स्थान में निर्मित भवन, फरगूसन महोदय के मतानुसार, "परीलोक की उत्पत्तियाँ" हैं, और कहने की आवश्यकता नहीं कि यह निर्णय प्रत्येक विचार से यथार्थ है।

सन् १५५६ में अकबर के सिंहासनारूढ़ होने के समय से ही उसने आगरा को अपनी राजधानी बनाए रखा। १६४० तक, जब शाहजहाँ ने सरकारी कार्यालयों को दिल्ली में स्थानांनतरित कर दिया, इसकी यह विशिष्टता बराबर बनी रही। किले में शाहजहाँ के कैद होने के बाद, औरङ्गजेब ने उस से दूर ही रहने का निश्चय किया और दिल्ली में ही मुगल दरबार जमा रहा।

औरङ्गजेब के बाद उसके उत्तराधिकारी निर्बल सिद्ध हुए, और आगरा पर बार-बार आक्रमण होता रहा और तीन सदियों तक बराबर उसका कोष तथा उसके भीतर संचित मूल्यवान वस्तुओं की लूट-खसोट मचती रही। नूरजहाँ बेगम के निजी आभूषण, जिनका मूल्य करोड़ों में आंका जाता है, अनेक बार एक के हाथों से दूसरे के हाथों में जाते रहे। वह जवाहरात की चादर, जिसे शाहजहाँ ने मुमताजमहल के मकबरे के लिए पन्द्रह लाख रुपये की लागत से बनवाया था, नूरजहाँ का जलक्लश, सोने की ज़री के गद्दे, मूल्यवान पन्ने व पुखराजों से जड़े हुए मोती, इन सब का गलत मूल्याङ्कन हुआ। नादिरशाह ने भी, जो दिल्ली के प्रसिद्ध तख्त ताऊस को अपने साथ ले गया, आगरा को लूट-खसोट में नहीं बख्शा। बाद में चल कर मरहटों ने आगरा पर अधिकार कर लिया और उन्होंने ताजमहल के मूल्यवान पत्थर उखाड़ डाले और किले में स्थित महलों में एक तूफान बरपा कर दिया। मरहटों के हाथों से आगरा ब्रिटिश के नियंत्रण में आया। सेनाओं ने यहाँ अपना अड्डा जमा लिया। उन्होंने दीवान आम को बारूदघर, अकबरी महल को बन्दीघर और सलीमगढ़ को रसोईघर के रूप में प्रयोग किया। अकबरी महल तो ब्रिटिशों के आविर्भाव से पहले ही आंशिक रूप से ध्वस्त हो गया था, दूसरे भवन उपेक्षा तथा टूट-फूट की अवस्था में यों ही पड़े रहे। अन्त में प्रसन्नता की बात है कि लार्ड कर्जन ने इन स्मारकों को अपने संरक्षण में ले लिया और इनकी सुरक्षा के लिए पर्याप्त साधन अपनाए गए। विशेष रूप से ताजमहल के प्रति अधिक ध्यान दिया गया। विस्तृत रूप से उसकी मरम्मत की गई। मुख्य गुम्बद में जो दरारें पड़ गई थीं उन्हें पूर दिया गया और अन्तरीय सज्जा, जो ताजमहल का सब से अधिक रोचक अंश है, पुनः व्यवस्थित की गई। पाथी हुई रविशें, जलाशय, नालियां और फव्वारे आदि वस्तुओं की मरम्मत की गई। वे भारी और बड़े-बड़े पेड़, जो इस स्मारक के दृश्य को छिपाते थे, काट डाले

गए और उनके द्वारा घेरी हुई भूमि को फूलों से आच्छादित घास के लॉनों में बदल दिया गया। संक्षेप में, सुरक्षा-कार्यों ने इस प्रसिद्ध स्मारक के चारों ओर की स्थितियों में सुधार किया और उसके आकर्षण तथा सौंदर्य को चार चांद लगा दिए।

इसी प्रकार किले में स्थित महलों तथा अकबर व ऐतमादुद्दौला के मकबरों पर भी पर्याप्त ध्यान दिया गया। ताजमहल मोती मस्जिद, और इसी श्रेणी के दूसरे भवन भारत की स्थापत्य-संपदा के अंग हैं। और उस कलात्मक सौंदर्य से युक्त हैं, जिसकी उत्पत्ति केवल कला की सादगी से ही हो सकती है।

अकबर का किला

सौंदर्य में ताजमहल की प्रसिद्ध इमारत के बाद जिस वस्तु ने भारी संख्या में देश विदेश के यात्रियों को आगरा की ओर आकर्षित किया है वह अकबर का किला है, जो "तुज़्के जहांगीरी" के अनुसार, शेरशाह सूरी के पुत्र सलीम शाह सूरी के द्वारा बनवाए हुए एक पुराने किले के स्थान पर खड़ा है। इसके भीतर बाद में आने वाले मुगल बादशाह बहुत सुन्दर सुन्दर महल छोड़ गए है।

यह क़िला भारत की सब से अच्छी इमारतों में से एक है। यह डेढ़ मील के घेरे के भीतर है और चारों ओर से लाल रेतीले पत्थर की दोहरी चार दीवारी से घिरा हुआ है। बाहरी दीवार चालीस फीट ऊंची है और भीतरी दीवार उससे भी तीस फीट ऊंची है। असंख्य बुर्जियों और झिरियों से सज्जित प्राचीरें शत्रु के लिए एक चुनौती प्रतीत होती हैं। बड़े-बड़े बुलन्द दरवाजे, जिनपर बहुतायत से नक्काशी की हुई है, तमाम क़िले का एक ऐसा प्रभावकारी चित्र उपस्थित करते है, जो देखते ही बनता है।

इस किले पर निर्माण कार्य सन् १५६६ ईस्वी में आरम्भ हुआ था, और शाहजहां की मृत्यु पर्यन्त जबकि औरंगज़ेब ने अपने दरबार दिल्ली में करने का निश्चय किया, यह किला बसा रहा।

इसका मुख्य प्रवेश द्वार दिल्ली दरवाज़ा अथवा हाथी पोल है, जो रेलवे स्टेशन और नगर की जामे मस्जिद के दूसरी ओर है। दिल्ली के क़िले के मुख्य प्रवेश द्वार पर भी दोनों ओर ऊंचे से ऊंचे चबूतरों पर पहले दो हाथी खड़े थे इसलिए इसका नाम हाथी पोल पड़ा। इन प्रतिमाओं तथा हाथियों को अकबर ने खड़ा करवाया था और इन से दरवाज़े के गौरव तथा शोभा की वृद्धि होती थी। हाथियों पर सवार प्रतिमाएं उन बहादुर राजपूतों जयमल और फतेहसिंह की थीं जिन्हें अकबर ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार करते समय युद्ध में वीरगति दी थी। बर्नियर महोदय लिखते हैं : 'उनके शत्रुओं ने उनकी वीरता और देश प्रेम से प्रभावित हो कर, उनके स्मारक स्वरूप, दोनों नायकों की प्रतिमाएं यहां रखवाई थीं।" दुर्भाग्यवश औरंगजेब की आज्ञा से उन्हें वहां से हटवा दिया गया और बाद में उनका कोई पता नहीं लगा।

दरवाजे के दोनों तरफ खड़ी मीनारों पर बनी सीढ़ियों पर चित्रकारी से अंकित नक्काशी की सुंदर छटा है। बाग के शिखर से किले के शेष भाग भलीभांति दिखाई पड़ते है और दीवारों के उस पार दूर पर ताज के गुंबद नज़र आते है। बाईं ओर ऐत्मादुद्दौला का मकबरा देखने में आता है और जामा मस्जिद की चौखट भी स्पष्ट रूप से नज़र आती है।

किले के स्थापत्य का मुख्य अधीक्षक (सुपरिन्टेन्डैन्ट इनचार्ज) कामिमखां था। आइन-अकबरी नामक पुस्तक के अनुसार, इस किले को बनाने में आठ वर्ष लगे, फिर इसके बनाने की कुल लागत ३५ लाख रुपए के लगभग कूती गई थी, जो उस समय श्रमशक्ति तथा रचना-सामग्री के सस्ती होने के कारण एक भारी रकम थी। किले के भीतर स्थित बहुत से उत्तम भवनों का विवरण नीचे दिया जाता है।

मोती मस्जिद

हाथी-पोल-प्रवेश-द्वार से गुज़र कर सड़क बाई ओर मुड़ जाती है और अतिथि को शाहजहां के द्वारा निर्मित मोती मस्जिद के प्रवेश द्वार पर पहुंचा देती है। सामान्य मुग़लकालीन स्थापत्य-कार्य के विरुद्ध यह इतनी सीधी-सादी और तड़क-भड़क से दिखाई पड़ती है कि उसके भीतर रचित उस विशुद्ध स्थापत्य का भान कठिनाई से ही हो सकता है, जिसने इस अनोखी इमारत को अनुभूति से भर दिया है।

किले की बड़ी-बड़ी लाल मुंडेरों के ऊपर उठे हुए, गुदे हुए, चक्करों से सुशोभित, मोती की भांति चिकने और श्वेत गुंबद एक ऐसा मनोहर दृश्य उपस्थित करते हैं कि मनुष्य का मस्तिष्क बरबस अलौकिक वस्तुओं की दिशा में सोचने के लिए बाध्य हो जाता है। संपूर्ण व्यवस्था में ये गुंबद इस प्रकार अपनी अनि-वार्यता सिद्ध करते हैं, कि उनके बिना शेष वस्तुओं की कल्पना हो ही नहीं सकती, और यही बात सभी उच्च कलाओं में आवश्यक है। पहले भी और अब भी, मोती मस्जिद सचमुच मुग़लों के स्थापत्य संबंधी स्मृति-चिह्नों में एक ऐसा मोती रहा है, जिसकी तुलना नहीं हो सकती।

इस मस्जिद का निर्माण सन् १६४८ में आरंभ हुआ और सन् १६५२ में लगभग तीन लाख रुपए की लागत से पूरा हुआ। अनेकों गोल गुंबदों से आवेष्ठित इस पूजागृह के सामने एक ऊंचा रमना है, जिसके बीच में अन्य भवनों की भांति एक फ़ौव्वारा है, और पास ही एक ओर छोटा सा चबूतरा यानी एक धूप घड़ी है।

रमना १५४ फ़ीट लंबाई में और १४८ फ़ीट चौड़ाई में है तथा मस्जिद का भीतरी भाग १५९ फ़ीट लंबाई में और ५६ फ़ीट चौड़ाई में है। मस्जिद की सफ़ेद कार्निस के नीचे काले संगमरमर से खचित फ़ारसी भाषा में एक स्मारक लेख है, जो इस इमारत के सौंदर्य के प्रति इसके निर्माता के द्वारा दीगई एक काव्यात्मक भेंट है।

मस्जिद की प्रत्येक ओर छोटे-छोटे कक्ष हैं, जिनकी अनोखी समानता के साथ संगमरमर के दृश्य बने हुए हैं। इनके भीतर बैठी शाही खानदान की महिलायें सुविधा के साथ मस्जिद में पढ़ी जाने वाली नमाज़ सुन सकती थीं। रमने के दाईं ओर बाईं ओर के ज़ीने महल के एक भाग में ले जाते हैं। मस्जिद के चारों कोनों पर बने हुए अष्टकोणीय मंडप और रमनों के दरवाजों तथा मेहराबों पर सजावट के साथ बने हुए अत्यन्त मनोरम छोटे-छोटे छायागृह संपूर्ण रचना की अभिन्नता और समृद्धि से पूर देते हैं।

नमाज़गृह के अन्तरीय भाग में खंभों की एक तिहरी पंक्ति है, जो एक दूसरे से तीन भागों से आने वाले पतली मेहराबों से जुड़े हुए हैं। खंभे संगमरमर के इकहरे पत्थरों से बने हैं और सीधे-सादे होते हुए भी प्रभावशाली हैं। यह इमारत यद्यपि सामान्य आकारप्रकार की है, फिर भी संसार स्थापत्य के उत्तमोत्तम नमूनों के समकक्ष रखे जाने के योग्य है।

Mughal Painting probably depicting the construction of the Elephant Gateway of Agra Fort (Preserved in the Albert and Victoria Museum, London).

मुगलकालीन चित्रकला में सम्भावित आगरा दुर्ग के गज द्वार का निर्माण (अलबर्ट और विक्टोरिया संग्रहालय, लंदन में सुरक्षित)।
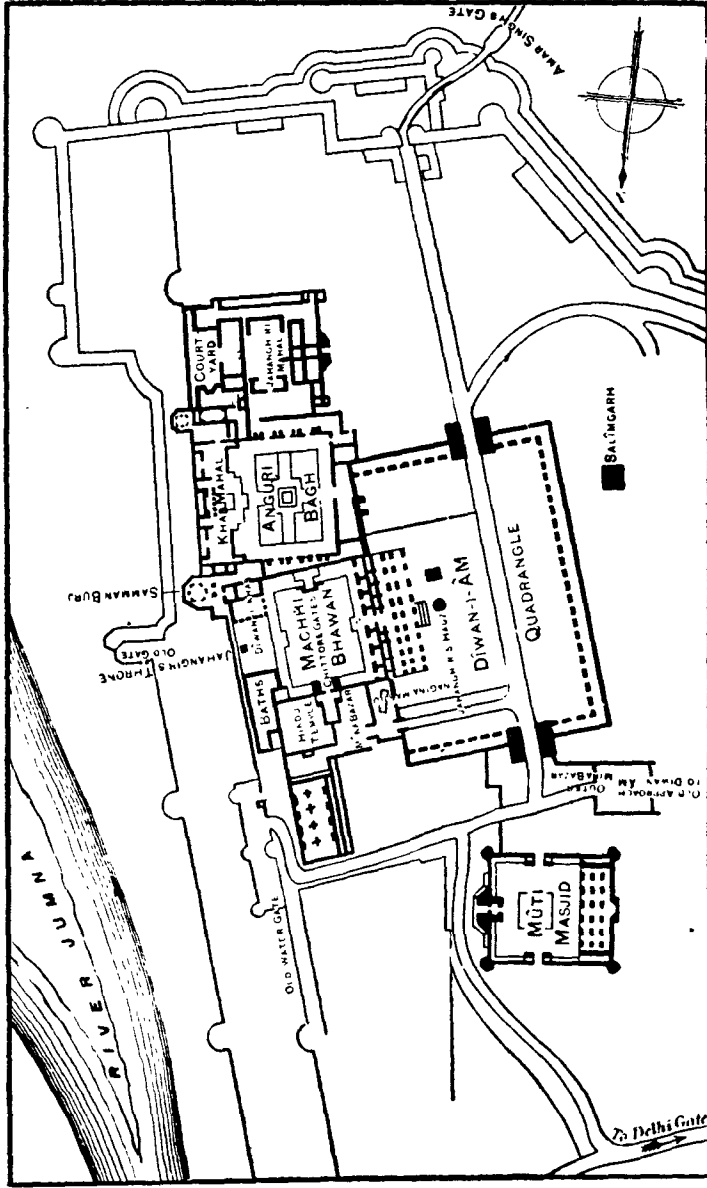
Agra Fort—Site plan of buildings. आगरे का किला—भवनों के स्थान का चित्र।
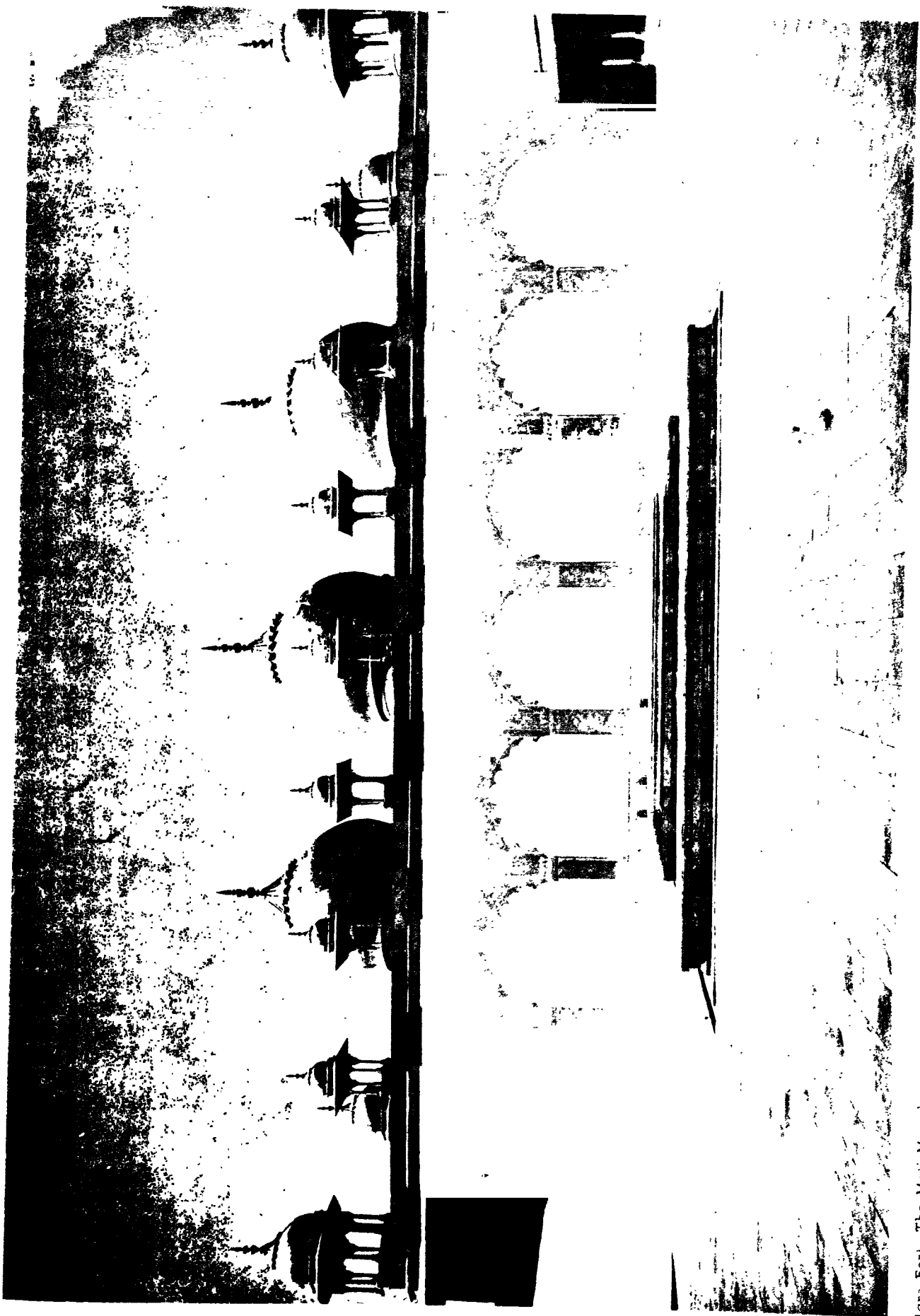
Agra Fort—The Moti Masjid.

आगरे का किला—मोती मस्जिद।
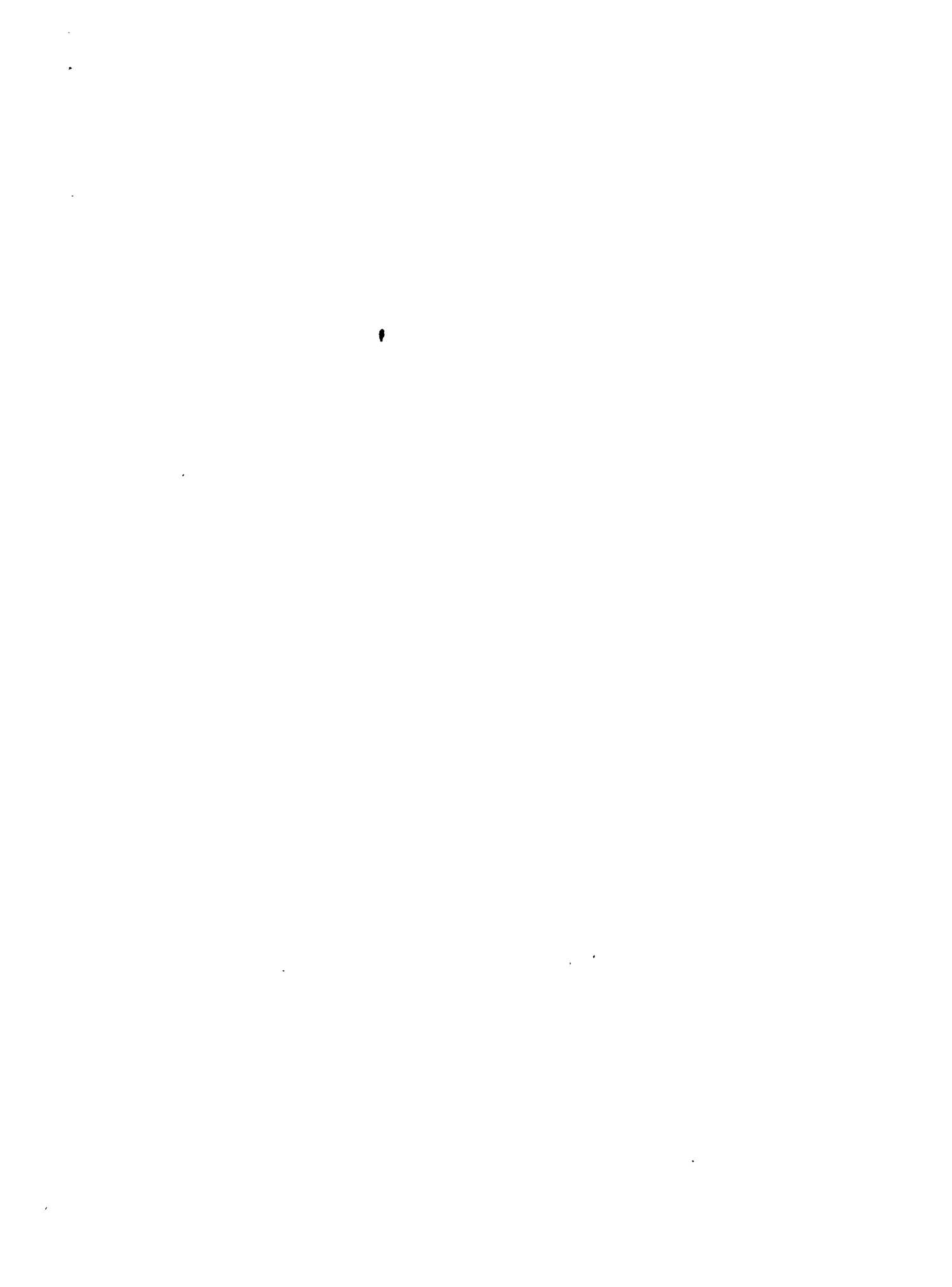
दर्शनी दरवाज़ा

यह एक पुराना दरवाज़ा है और अकबर के भवनों का एक भाग है। बाईं तरफ इसी की ओर जाने वाले एक मार्ग से इस तक पहुंचा जा सकता है, और यह मोती मस्जिद के लगभग सामने ही है। इसके द्वारा नदी किनारे बने हुए एक दरबार की ओर जाया जाता है, जहाँ हर सुबह सूर्योदय पर बादशाह अपने सरदारों तथा प्रजाजनों को दर्शन देता था।

यहीं से वह हाथियों, ऊंटों, भैंसों, भेड़ों और बारहसिंगों तथा हिरनों आदि के युद्ध देखा करता था और नर्तकों गायकों व जादूगरों के करतब निरखता था।

दीवान-ए-आम

अब सड़क दाईं ओर मुड़ती है और मीना बाजार के बीच में होकर गुजरती है। मीना बाज़ार एक ऐसा पुराना क्रय-विक्रय का स्थान था, जहाँ विशेष अवसरों पर, सरदारों की सुन्दर सुन्दर बहूबेटियां जवाहरात, रेशम की ज़री के वस्त्रादि तथा अन्य बहुमूल्य सामग्री शहंशाह तथा उसके दरबारियों के हाथ बेचने के लिए उनका प्रदर्शन करती थी। यहीं से एक दरवाज़ा दीवाने-आम अथवा जनगृह की ओर जाता है। ब्रिटिश द्वारा इस क़िले पर अधिकार के समय में, सैनिकों ने यहाँ अपना निवास बना रखा था, और इसके भवन किले की रक्षक सेना के लिए हथियारखाने का काम देते थे। इसका बड़ा हाल १८७६ में सुधार-कार्य के अन्तर्गत आया और जहाँ तक संभव हो सका रचना भी अपनी प्रारम्भिक अवस्था में परिवर्तित हो गया।

बड़े हॉल की रचना तो शाहजहाँ के काल मे आरम्भ हुई थी, किन्तु चारों ओर से धनुषाकार छतों से घिरे चतुर्भुज स्थान का सम्बन्ध संभवतः अकबर के समय से ही है। १९२ फ़ीट लम्बा और ६४ फीट चौड़ा हाल मसाले के पत्थर का बना हुआ है और उसके ऊपर चूने का पलस्तर है। रंगीन सजावट तथा गुदे हुए चित्र अब शेष नहीं रह गए है, लेकिन जहां तहां उनके चिह्न दिखाई पड़ जाते है। छत बराबर अन्तर पर जमे हुए ऊचे ऊंचे खंभों की तीन पक्तियों पर टिकी हुई है, और वे एक दूसरे से शानदार मेहराबो से जुड़े हुए हैं। हॉल की पिछली ओर संगमरमर के छोटे-छोटे टुकड़ों से सज्जित एक छायादार स्थान में शहंशाह का तख्त है, जिसके पीछे शाही कक्षों से सम्बन्ध बना हुआ है। छत्रमंडप के नीचे एक तीन फीट ऊंचा संगमरमर का चौकोर चबूतरा है, जिस पर बैठ कर मंत्री गण बादशाह के हज़ूर में आए हुए प्रार्थना पत्रों को ग्रहण करते थे और उन पर बादशाह की आज्ञाओं का पालन करवाते थे। किसी समय यह चांदी की छड़ों से घिरा हुआ था। तख्त के ऊपर चढ़ने के लिए चांदी से मंढी हुई सीढ़ियाँ थी, और चारों कोनों पर चार चांदी के शेरों पर, जिन पर जवाहरात के पतरे जड़े हुए थे चंदोवा तना हुआ था। चंदोवा विशुद्ध सोने का बना था। शाही तख्त एक के बाद एक छड़ों की पंक्तियों से दूर होता चला जाता था, जिन मे तख्त के सब से निकट की लाल छड़ों से घिरे स्थान मे शाही खानदान के शहजादे, राजदूत, राज्य के ऊंचे ऊचे अफसर, और सरदार तथा ऊंची पदवीधारी व्यक्ति बैठते थे। दूसरी छड़ों की पंक्ति के भीतर छोटे-छोटे सरदार लोग आते थे, और उसके बाद एक विशाल खुला हुआ स्थान लोगों के लिए नियत था। सब लोग आदर के साथ चुपचाप खड़े रहते थे और शहंशाह का पूरा आकार सबको दिखाई पड़ता था।

तख्त की दोनों तरफ़ शाही खानदान की औरतों के लिए कमरे बने हुए हैं, जहाँ छेंकदार खिड़कियों की ओट से वे दरबार की कार्यवाही देख सकती थीं।

किसी पर्व के अथवा अन्य विशेष अवसरों पर हाल के खंभों पर सोने की झालरें लटकाई जाती थीं तथा फूलदार साटन के मंडवे, जिनमें लाल रेशम की रस्सियाँ बंधी होती थीं, सारे हॉल के ऊपर तने रहते थे। फ़र्श शानदार कालीनों से ढक जाता था।

जहांगीर का जलागार

दीवाने-आम के ठीक सामने हल्के रंग के कठोर पत्थर के एक ही टुकड़े से बना हुआ एक विशाल जलागार है , जिस में सीढ़ियां लगी हुई हें। यह एक स्नानागार है, जिसे जहांगीर का हौज़ कहते हैं। यह लगभग पाँच फीट ऊँचा है और शिखर पर इसका व्यास आठ फीट है। पहले पहल यह जहांगीरी महल के दरबारों में से किसी एक में खड़ा किया गया था।

बाहरी गोल किनारे पर एक लम्बा फ़ारसी लेख है जिसका आशय यह है कि यह सन् १६११ ईसवी में जहांगीर के लिए बनाया गया था।

मीना बाज़ार

दीवाने-आम के पीछे स्थित महल के ज़नाने भागों की ओर जाने से पहले आँगन के बाईं ओर वाले दरवाज़े से एक छोटे से भाग में पहुँचा जा सकता है, जो शाही खानदान का निजी बाजार था। सरदारों की पत्नियां यहां पर सभी प्रकार की उत्तम व कलात्मक वस्तुएं बादशाह तथा उसके सभासदों के हाथों बेचने के लिए लाती थीं। बादशाह एक संगमरमर की बालकनी में बैठा करता था, जहां से सारा आंगन दिखाई पड़ता था। वह महान् मुग़ल और उसके सभासद हास्य मेलों का आयोजन करके तथा सरदारों की बहूबेटियों से वस्तुओं के लेन देन के बारे में मामूली ग्राहकों की तरह हुज्जतबाज़ी करके—जैसा कि प्रायः साधारण बाज़ारों में एक-एक दो-दो पैसों के ऊपर होती है – अपना मनोरंजन करते थे। इस मे सभी लोगों का भारी मनोरंजन होता था क्योंकि यह सारी कार्यवाही की ही मनोरंजन के लिए जाती थी। इन्हीं मेलों में से किसी एक के अंदर शहज़ादा सलीम, जो बाद में चल कर जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ, सुन्दर मेहरुन्निसा से मिला था और उसके लिए उसके हृदय में प्रेम उत्पन्न हो गया था। यही मेहरुन्निसा बाद में चल कर नूरमहल अथवा नूरजहां बेगम कहलाई। इस प्रेम प्रकरण का अंत आगे चलकर उनके विवाह में ही हुआ।

बाईं ओर, इस रमने का अगला भाग हमें चित्तौड़-दरवाज़ों की ओर ले जाता है, जिसे अकबर ने १५६८ में उसके वीर रक्षकों से घमासान युद्ध के बाद, उस महान् राजपूती किले की विजय के स्मारकस्वरूप वहां से ले आया था। इन दरवाज़ों के पीछे, जिन्हें आम तौर पर बंद रखा जाता है, एक और खंभेदार छतों से घिरी हुई वर्गभूमि है। यहां पर एक हिन्दू मन्दिर स्थित है, जिसे भरतपुर के राजाओं में से किसी एक ने बनवाया था। अठारहवीं शताब्दी के मध्य भाग में उसने आगरा पर अधिकार किया था और किला तथा नगर लगभग दस वर्ष तक उसके आधीन रहे थे।

Agra Fort—Amar Singh Gateway

आगरे का किला—अमरसिंह – प्रवेश द्वार।

मच्छी भवन

दीवाने-ग्राम में लौट कर, वहां से एक ज़ीने पर चढ़ कर हम सिंहासनगृह मे होते हुए उन ऊपरी दालानों में पहुंच सकते है, जिन्होंने मच्छी भवन को घेर रखा है। यह पूरा का पूरा संगमरमर का बना हुआ है और इस में फूलों के बिछौने, जल-मार्ग, फ़ौव्वारे तथा मछलियों के तालाब आदि बनवाए गए थे, जिनमे दुर्भाग्य से अब कुछ भी शेष नहो रह गया है। भरतपुर का राजा सूरजमल यहां से विशाल परिमाण में मीनाकारी तथा संगमरमर की नक्काशी का सामान ले गया था। लार्ड विलियम बेंटिक ने शेष भागों को तुड़वा दिया और उसके भागों को नीलाम के द्वारा बेच डाला। कोलोनल स्लीमन महोदय ने अपनी पुस्तक "एक भारतीय अफ़सर के भ्रमण तथा स्मृतियां" में लार्ड विलियम बेंटिक पर इसी प्रकार की कलासंबन्धी क्रूरता का आरोप लगाया है और उन्होंने अपनी टिप्पणियों को इन शब्दों के साथ समाप्त किया है : "... यदि इन वस्तुओं से आशा के अनुकूल दाम मिल जाते, तो संभव था कि सारा का सारा महल, यहाँ तक कि ताजमहल भी, बिस्मार कर दिया जाता और इसी प्रकार बेच दिया जाता।"

नगीना मस्जिद

तख्तघर के बाईं तरफ़, बरामदे के अन्त में एक दरवाज़ा है, जो एक छोटी सी मस्जिद के भीतर खुलता है। यह मस्जिद निर्दोष संगमरमर से शहंशाह औरंगज़ेब ने अपने हरम की औरतों के लिए बनवाई थी। यह इस से पूर्व उसके पिता शाहजहाँ द्वारा बनवाई हुई मोती मस्जिद की नक्ल के डिज़ाइन पर बनी थी। फिर भी, इसकी आकृति तथा कार्यकौशल उस से कहीं घट कर है।

दीवान-ए-खास

दीवाने-खास उन महलों के एक भाग में बना हुआ है, जहां से जमना नदी दिखाई पड़ती है और इसे शाहजहां ने सन् १६३७ ईसवी में बनवाया था। यह लम्बाई में ६४ फीट, चौड़ाई में ३४ फीट और ऊँचाई में २२ फीट है। यह एक खुले गलियारे को जोड़ने वाले दो बड़े-बड़े हालों मे बना है, जो एक धनुषाकार खंभों वाली छत से संयुक्त है। खंभों और मेहराबों पर भारी नक्काशी तथा मीनाकारी की हुई है और संगमरमर की दीवारें उभरे हुए फूलों तथा गुलदस्तों से फारसी शैली पर सजाई गई हैं। दिल्ली के दीवाने-खास से तुलना करने पर इसका मंडप भी अनुपात तथा सजावट के सौंदर्य में कुछ घट कर नहीं है। स्पष्ट ही मालूम होता है कि इसकी प्रेरणा तथा प्रत्यक्ष रूप फ़ारसी कला से लिए गए हैं।

जहांगीर का सिंहासन

दीवाने-खास के सामने एक लम्बा चौड़ा चबूतरा है, जिस पर दोनों तरफ एक-एक तख्त रखा हुआ है। उनमें से एक सफेद तथा दूसरा काले संगमरमर का बना हुआ है। १६०३ के सन् का एक उभरा हुआ लेख तख्त के एक ओर लिखा हुआ है, जो अकबर के उत्तराधिकारी के रूप में जहाँगीर का नाम प्रकट करता है। सम्भव है कि जहांगीर इस चबूतरे पर जब-तब बैठ कर हाथियों की लड़ाई अथवा नदी का दृश्य देखा करता हो।

स्नानागार

दीवाने-खास के सामने वाले चबूतरे के बराबर में बहुतसे कमरे बने हुए हैं, जो स्नानागारों का काम देते थे। केवल मात्र शाही खानदान की स्त्रियों को ही उन्हें उपयोग में लाने का अधिकार था। नक्काशी तथा मीनाकारी की सजावट में वे दूसरे शाही कक्षों की भाँति ही ऊँचे रहे होंगे, लेकिन इस समय वे खंडहरों की अपेक्षा कुछ अच्छी हालत में हैं। कहा जाता है कि उनमें से जो सर्वोत्तम था वह गवर्नर जनरल मारक्विस आफ हेस्टिंग्ज़ (१८१३ से १८२३) के समय में तोड़ डाला गया था और उसका संगमरमर जार्ज चतुर्थ को भेंट के रूप में भेज दिया गया था। बाकी बचे कमरों में से एक अन्य के पाँच संगमरमर के टुकड़ों को इसी भांति बाहर भेज दिया गया।

सम्मन बुर्ज

दीवाने-खास के पीछे से एक सीधे-सादे दरवाजे के भीतर होकर हम एक अष्टकोणीय मंडप में जाते हैं, जिसे चमेली-मीनार कहा जाता था। यह एक सुन्दर दो मंज़िला मंडप है, जो नदी का दृश्य दिखाने वाले गोलाकार कोणस्तंभों में से एक पर बना हुआ है और इससे नूरजहाँ बेगम की उत्तम रुचि का पता भली भाँति चल जाता है। कहा जाता है कि उसी ने इसकी जड़ाऊ सजावट को फ़ारसी शैली पर निर्मित कराया था। ज़मीन में खुदा हुआ गुलाब के फूल के आकार का एक जलाशय है, जिसके बीच में एक फ़ौव्वारा लगा हुआ है। जहाँगीर तथा नूरजहाँ का शासनकाल समाप्त हो जाने के बाद वह सुन्दर स्थान शाहजहाँ व मुमताज़महल के अधिकार में भी रहा, जिन्होंने आँगन की एक ओर एक ऊंचा चबूतरा बनवाया था, जिसपर पच्चीसी के खेल के लिए काले वर्गाकार संगमरमर पत्थर जड़े हुए थे। मुमताज़महल बेगम के देहान्त के बाद कहा जाता है कि उसकी सब से बड़ी लड़की जहानआरा बेगम भी यहाँ पर रही थी। जब शहंशाह शाहजहाँ को औरंगज़ेब ने कैद कर लिया था, तो उसके बन्दी जीवन के लम्बे सात साल इसी स्थान पर कटे थे, और यहीं पर उसकी मृत्यु हुई थी।

खास महल

सम्मन बुर्ज से आगे चल कर हम उससे मिले हुए शाही महल के उन निजी भागों की ओर आते हैं, जहाँ हरम की स्त्रियाँ रहा करती थीं। यह भवन भारी सजधज से पूर्ण है। यहाँ की सजावट का काम कलात्मक अनुपातों तथा डिज़ाईन के कलात्मक मूल्य का विचार नहीं रखता। किस प्रकार मीने की छतों से पटे हुए इन मंडपों में लोग रहते होंगे यह केवल कल्पना करने की बात है। रचना की योजना ऐसी है कि संगमरमर सूर्यावसान के रंगों को प्रतिबिंबित करता है, और जब फ़ौव्वारे अपनी मधुर रागिनी छेड़ते होंगे, तो निश्चय ही इसके निवासियों के विश्रामजनित सुख में वृद्धि होती होगी, यद्यपि हो सकता है कि उस सुखानुभूति में एक विशेष प्रकार का अतिरेक रहता हो।

कुछ आलोचकों ने शाहजहाँ के स्थापत्य का विवरण देते हुए कहा है कि यह "लचीला, उलझा हुआ, तथा फौव्वारे की फुवार तथा चिड़ियों के संगीत की तरह दमकता हुआ" है, सो ठीक ही कहा है। उसके दरबार के कारीगर अकबर के उत्पादक विचारों को अधिक मूल्यवान सामग्री की वेशभूषा पहना रहे थे और अकबर
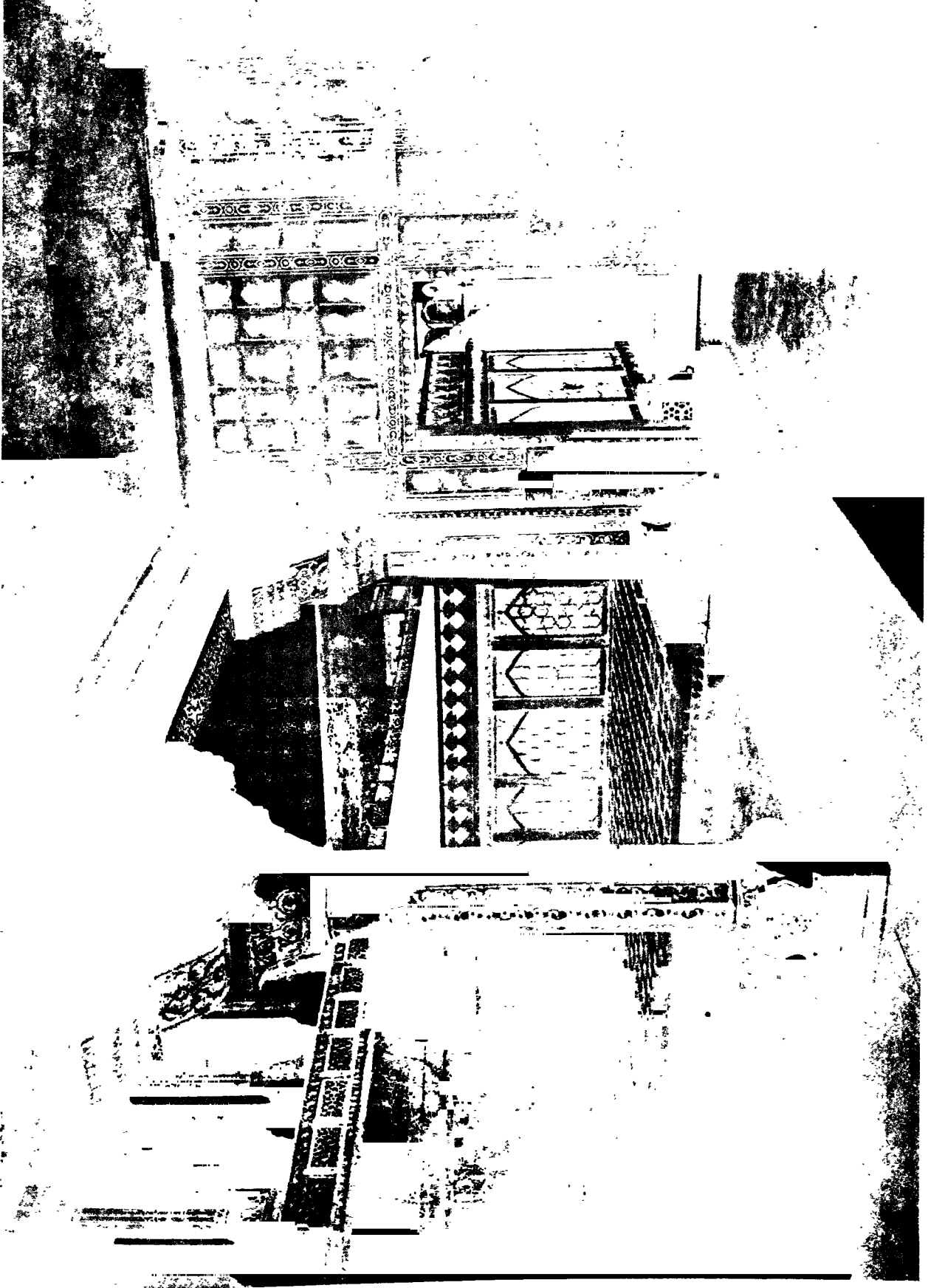
Agra Fort—Samman Burj, inside the quadrangle

आगरे का किला—चतुर्भुजाकार के अंतर्गत सम्मन बुर्ज।
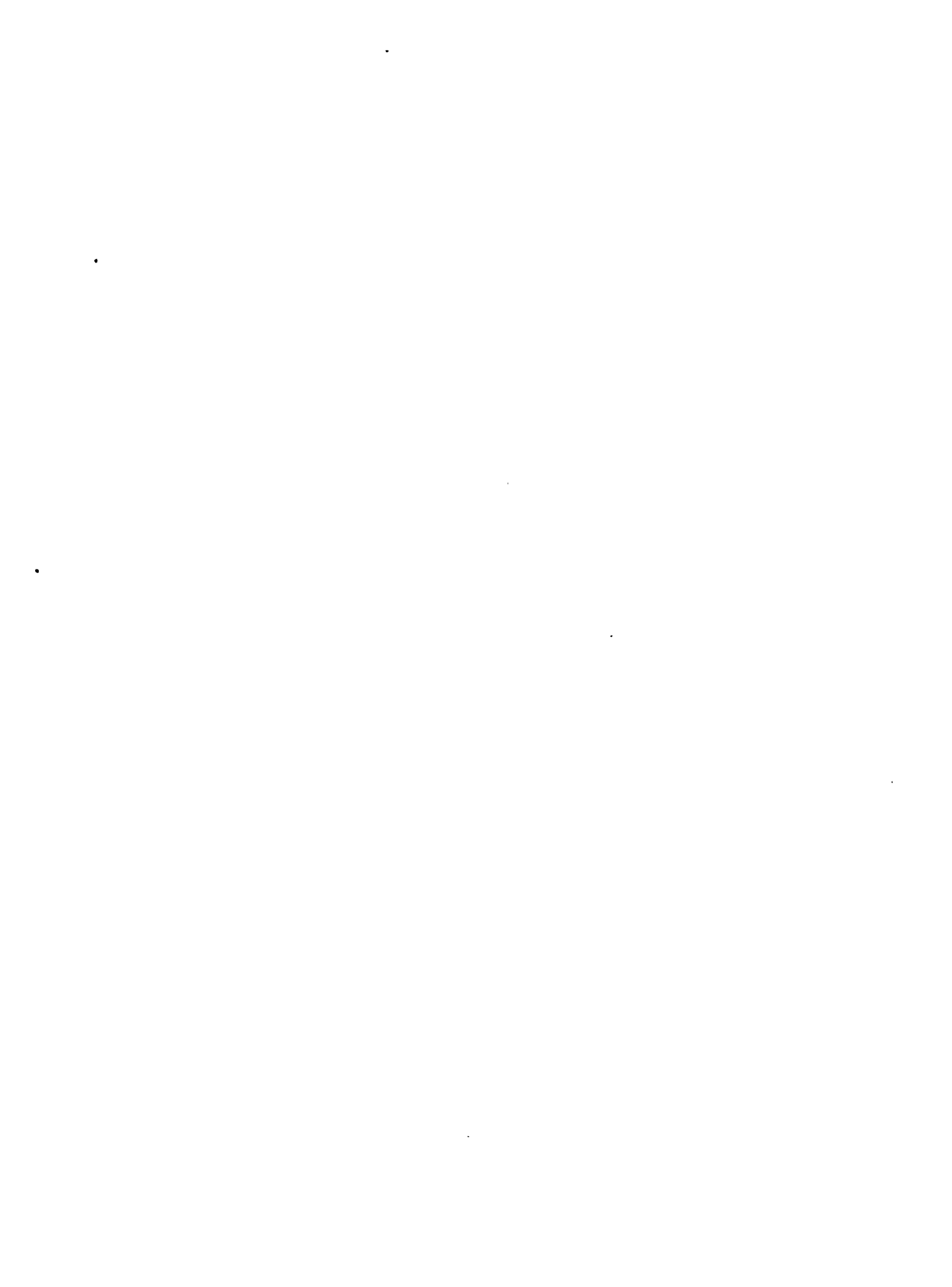
के युग के स्थापत्य की मबल जीवनीशक्ति तेज़ी के साथ इमारतों के डिज़ाईनों में पूर्व सुधारों के ऊपर जनानी तथा विलासपूर्ण कला को स्थान देती जा रही थी।

जहांगीर तथा शाहजहां गौरवशाली निर्माता थे किंतु उनके गौरव का एक दूसरा रूप भी था। यद्यपि मज़दूरियों तथा सामग्रियों में व्यय करने के लिए उनके द्वारा भारी-भारी रकमें दी जाती थीं, लेकिन बीच के लोग अपनी जेबों को खूब ठूंस ठूंस कर भरते थे। इन सम्राटों की ओर से किसी प्रकार का संगठित नियंत्रण न होने के कारण, यह विश्वास किया जाता है कि संभवतः ताज के बनाने वाले अनेक कलाकार भूख से तड़प २ कर मर गए।

खास महल की दीवारों में भारी संख्या में, तथा नदी का दृश्य दिखाने वाली बालकनी में अनेक, खाली स्थान मिलते हैं। ऐसी रिपोर्ट है कि शीशे में जड़ी हुई मुग़ल बादशाहों की बहुत सी तस्वीरें तथा प्रतिमाएं यहां पर थीं। लाल की पत्तियों से बने बहुत से हीरे जवाहरात के काम के फूल और हीरे जड़े संगमरमर पत्थर किले पर शत्रुओं का अधिकार होने के समय निकाल लिए गए और वे बाहर चले गए। पालिश किए हुए फ़ौव्वारे और जलमार्ग अब शोक के मारे सूखे पड़े हैं। खास महल की दीवारों पर अंकित एक फ़ारसी कविता में इसका रचनाकाल १५३६ बताया गया है।

अंगूरी बाग़

खास महल के सामने अकबर का विशाल चौखूंटा दालान २३५ फ़ीट लंबा और १७० फ़ीट चौड़ा है। इस प्रकार से यह उस पुराने मुग़लिया बाग़ की हद है, जिसके भीतर ज्योमिति के विचार से फूलों के बिछौने बनाए गए हैं और केन्द्रीय चबूतरे तथा फ़ौव्वारे से उभरी हुई रविशों का उद्गम होता है। यह तीन ओर से कमरों के तीन वर्गों से घिरा हुआ है और इसका निर्माण बादशाह के परिवारजनों के उपयोग के लिए हुआ था।

अंगूरी बाग़ के उत्तरी भाग में से एक छोटा सा मार्ग स्त्रियों के लिए बने हुए एक विचित्र महल की ओर निकल जाता है, जिसे शीशमहल कहा जाता है। यहां पर स्त्रियां स्नान करती थीं। फर्श पर बने हुए संगमरमर के चबूतरे तोड़ लिए गए हैं किन्तु फिर भी दीवारों पर उभरे हुए ऊबड़-खाबड़ मसाले पर शीशे की मीनाकारी कहीं-कहीं दिखाई पड़ जाती है। शीशमहल से एक मार्ग पुराने जलदरवाज़े की ओर निकल जाता है। आगरा के भयानक ग्रीष्मकालीन ताप से बचने के लिए बादशाह तथा उसके परिवारजनों को यहां जमीन के नीचे बने हुए तहखाने ठंडक प्रदान करते थे। एक कोने में एक बावली बनी हुई है। यहाँ पर बहुत सी कालकोठरियां बनी हुई हैं, जिन में गुलामों को सजा देने के लिए रखा जाता था और उन में से उनके मृत शरीरों को निकाल कर बाहर बहते हुए दरिया के पानी में बहा दिया जाता था।

जहांगीरी महल

खास महल के दक्षिण में और अमरसिंह दरवाज़े के निकट ही स्थित शहंशाह जहांगीर का आकर्षक महल है। यह एक दो मंज़िला भवन है, जो अपने हिन्दू कारीगरों की उन्मुक्त कल्पना और रचनाकौशल को प्रतिबिंबित करता है।

ऐसा प्रतीत होता है कि युवराज के निवास स्थान के रूप में इसकी योजना तथा आंशिक निर्माण अकबर के समय में हो चुका था और जहांगीर के समय में संभवतः फतेहपुर सीकरी के बनाने वाले कारीगरों के हाथों से ही यह पूर्ण भी हुआ था।

कुल आलोचकों के मतानुसार मुग़लकालीन स्थापत्य में फारसी प्रभाव उसकी उत्पादक क्रियाशक्ति का साधन न होकर एक प्रकार की निर्बलता का तत्व था। गहरी नक्काशी से गुदे हुए सुन्दर व भारी खंभों पर आधारित, बिना जुड़ी, पत्थर की कड़ियों पर टिकी हुई छतों में बहुत सी रचना सम्बन्धी विशिष्टताएं यहां मिलती हैं। बहुतायत से नक्काशी किए हुए हिन्दू कोनिए, हर तरफ चिड़ियों के जोड़ों की पीठ पर आधारित परंपरागत कमल के फूलों को ढलाव, नदी के सामने वाली इमारत की छत में हाथियों के गुदे हुए चित्र, ये सब ऐसी सजावटे हैं, जो हिन्दू रुचि को प्रकट करती हैं और हिन्दू कला को गौरवान्वित करती हैं। बारीकी से भरे हुए कोनियों की कारीगरी तथा समानता और उस में भी मिलने वाली स्पष्ट विभिन्नताएं वास्तव में अद्‌भुत हैं। इस भवन में सात महल बने हुए हैं और उन में से प्रत्येक एक मनोरंजक योजना और विशिष्ट सज्जा से सज्जित है। मुग़ल बादशाहों की राजपूत रानियां इन में निवास करती थीं। इन में प्रमुख जोधाबाई थी, जो जहांगीर की पत्नी और शाहजहां की माता थी। उसका महल मुग़लकालीन स्थापत्य की एक महान् रचना है। यदि इस बात को लिया जाए, तो वह विशुद्ध और सीधी-सादी हिन्दू स्थापत्य-कला का एक नमूना है। सौंदर्य इसके उत्तम अनुपातों तथा भारी साज-सज्जा में इतना नहीं है, जितना उन कोणों से उत्पन्न छाया और प्रकाश के संगीतमय खेल से प्रकट होता है, जो हिन्दू डिज़ाईन पर बने हुए उन दरवाज़ों, खिड़कियों तथा दालानों के प्रशंसनीय रूप तथा रचना को साकार करते हैं, और जो एक ऐसे अवर्णनीय आकर्षण से लबालब भरे हुए हैं, जो भारतीय देशी शैली की विशिष्टता है।

अंतरीय भाग का मद्धिम प्रकाश इसके उन विशाल खंभों के प्रभाव को बढ़ाता है, जिनके विशाल कोनिए छत तक फैले हुए हैं। इमारत की छत पर दो मंडप बने हुए हैं। ये सुन्दर नक्काशी से पूर्णतः सज्जित हैं। महल की पानी की आवश्यकता को पूरा करने वाले बहुत से जलागार भी यहां पर हैं।

सलीमगढ़

दीवाने-आम के विशाल आंगन के पीछे पहले एक महल खड़ा था, जिसका अब एक दो मंज़िला मंडप मात्र ही बाकी रह गया है। यह भी भारी सज्जा से पूर्ण है। इस बात में मतविभेद है कि इसे अकबर से पहले सलीमशाह सूरी ने बनवाया था या शहज़ादे सलीम ने, जिसने जहांगीर के नाम से पिता की मृत्यु के बाद शासन किया था। इस बात की पूर्ण संभावना है कि यह जहांगीर की ही रचना थी, जैसा कि इसके डिज़ाईन की शैली से पता चलता है, जिसपर जहांगीरी महल तथा फ़तेहपुर सीकरी में अकबर की इमारतों के युग की छाप है।

जामा मस्जिद

किले के मुख्य प्रवेशद्वार के सामने उत्तर पश्चिमी दिशा में जामा मस्जिद है। इसकी रचना का श्रेय शाहजहाँ की सब से बड़ी लड़की जहानआरा बेगम को जाता है। यह भी उसी शैली में बनी हुई है, जिस शैली
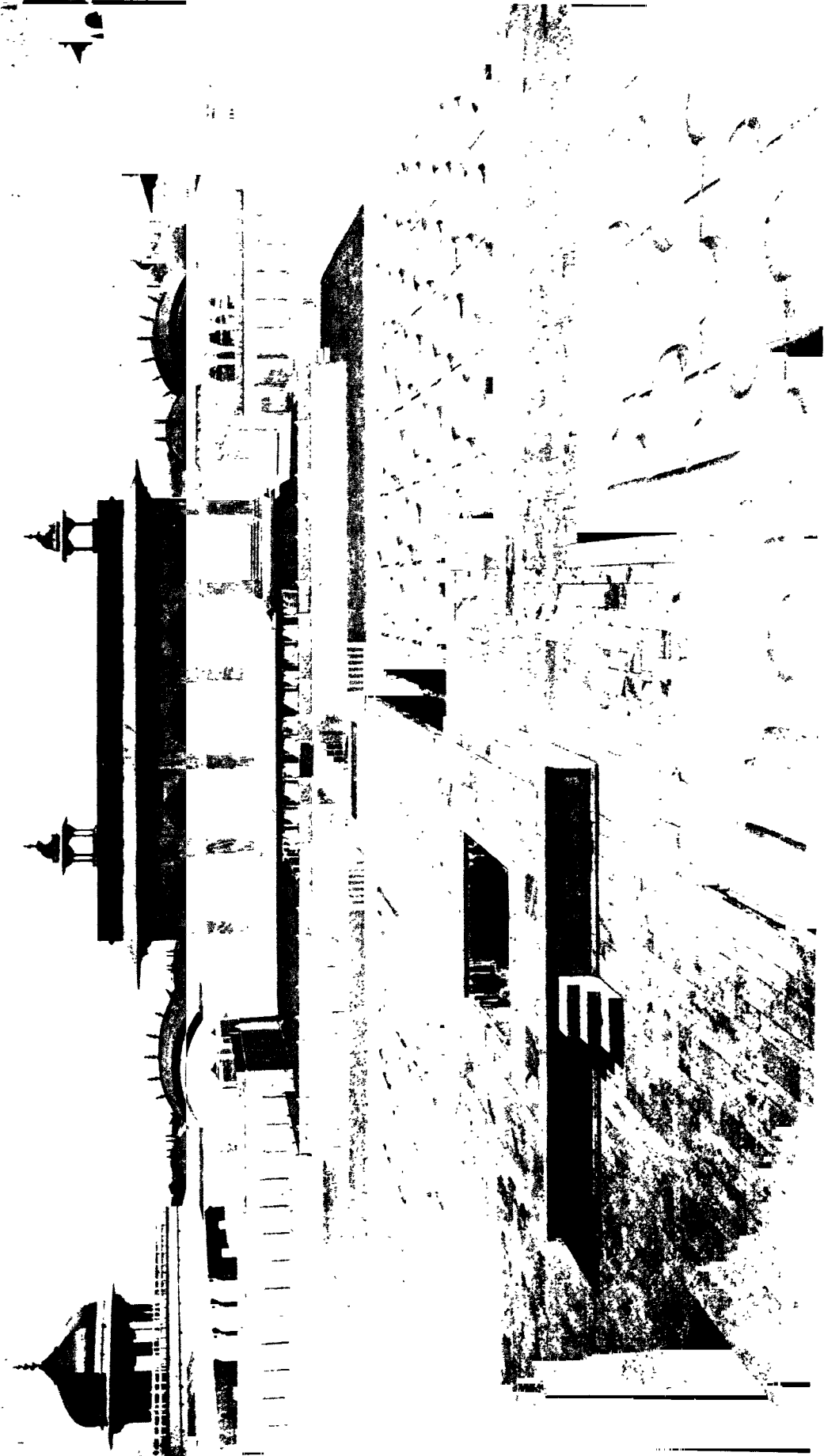
Agra Fort. Shah Jehan's palaces.

आगरे का क़िला—शाहजहाँ के महल।
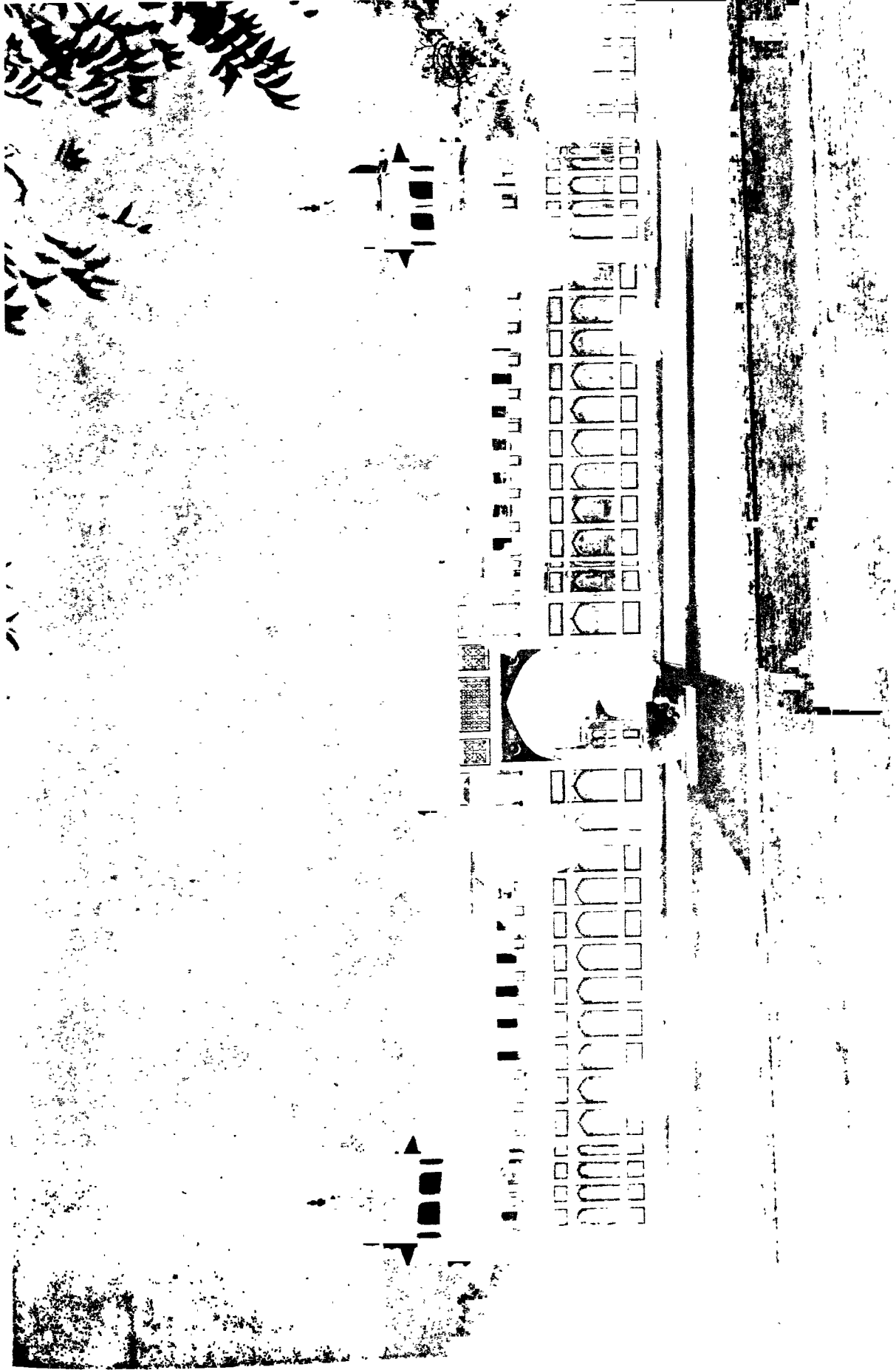
Agra Fort—Jehangiri Mahal.

आगरे का किला—जहाँगीरी महल

में बनी हुई है, जिस शैली में शाहजहाँ ने दिल्ली में जामा मस्जिद बनवाई थी, लेकिन यह उसकी बहुत घटिया नकल है। गुंबद के घुमघुमौवा रेखायें निश्चय ही बहुत भद्दी लगती है। यह पाँच लाख रुपयों की लागत से सन् १६४४ ईस्वी में निर्मित्त हुई थी।

ऐत्मादुद्दौला का मकबरा

क़िले से कुछ दक्षिण की ओर हटकर, नदी के पूर्वी किनारे पर ऐत्मादुद्दौला का मकबरा स्थित है।

यह एक ऐसे चारदीवारी से घिरे हुए बाग़ में बना हुआ है, जो उत्तम प्रकार के पुराने वृक्षों, घास के लॉनों तथा संगमरमर के जलमार्गों से पूर्ण हैं। इसके निर्माण का श्रेय शहंशाह जहाँगीर की बेगम, नूरजहाँ, को है। इसके बनने में अनेक वर्ष लगे।

ऐत्मादुद्दौला का वास्तविक नाम मिरज़ा गियास बेग था। वह नूरजहाँ बेगम का पिता था। वह एक पारसी था, जो भारत में शहंशाह अकबर के दरबार में, अपने भाग्य की परीक्षा करने के लिए आया था। अपने परिवार के साथ जब वह विशाल मरुभूमि को पार कर रहा था, तो उसकी पत्नी ने एक कन्या को जन्म दिया। फ़ाकेकशी से त्रस्त माँ बाप ने उसे एक जंगली झाड़ी के नीचे रख दिया और राहत की तलाश में आगे बढ़ चले। लेकिन नवजात शिशु की माता उसके विरह को सहन नहीं कर सकी, इसलिए वे उसे लेने के लिए वापस लौटे और उन्होंने अपने बच्चे को संभाल लिया। शीघ्र ही एक कारवान उन्हें दिखाई पड़ा और उसने एक दल को मुसीबत से छुटकारा दिया। इन परिस्थितियों के भीतर उत्पन्न यह वही बच्ची थी, जिसने अपने पिता के लिए यह मकबरा बनवाया।

मिरज़ा गियास बेग न केवल एक अच्छा विद्वान था, बल्कि फ़ारसी कवि भी था। इस प्रकार जब यह कारवान लाहौर पहुंचा, जहाँ उस समय सरकारी कार्यालय थे, तो अकबर का ध्यान मिरज़ा की ओर आकर्षित हुआ। अकबर ने उसे अपनी नौकरी में ले लिया और शीघ्र ही उन्नति होती चली गई। अकबर के मुख्य कोषाध्यक्ष की पदवी से बढ़कर वह जहाँगीर के प्रधान मंत्री के पद पर जा पहुंचा। जब वह बहुत बूढ़ा हो गया, तो उसके बेटे आसफखाँ ने उसके उत्तराधिकार स्वरूप उसका पद संभाला।

एक बार कश्मीर की यात्रा करते हुए राह में ही ऐत्मादुद्दौला बीमार पड़ा और मर गया। उसकी बेटी नूरजहाँ और शहंशाह जहाँगीर उसके लौकिक अवशेषों को आगरा में ले आए और नूरजहां ने अपने पिता के लिए एक सुन्दर मकबरा बनाने की आज्ञा दी। इस से हमें उस सुसभ्य दरबारी मुख्य कोषाध्यक्ष और प्रधान मंत्री, तथा उसकी सुन्दर व सफल बेटी, नूरजहाँ, की परिष्कृत व व्यापक रुचियों का पता चलता है। इसके निर्माण में वह संक्रमण स्पष्ट रूप से प्रकट हुआ, जो अकबर की शैली से शाहजहाँ की शैली तक, जहांगीरी महल से दीवाने खास, मोती मस्जिद तथा ताजमहल की शैली तक हुआ। चारों कोनों पर बनी हुई मीनारें ताजमहल की विलग मीनारों के उत्तरकालीन विकास का परिचय देती है। अकबरी इमारतों की विशिष्ट हिन्दू अनुभूति यहां केवल मकबरे के ऊपर वाले केन्द्रीय प्रकोष्ठ की छत में देखने को मिलती है। विशुद्ध अरबी स्थापत्य मे मकबरे को सदा गुंबद से अवश्य ढका जाता है। किले में अपने महलों के स्वर्ण मंडपों में भी शाहजहां ने छतबंदियों के ऊपर इसी प्रकार की छतों का ढंग अपनाया था।

छः साल के निर्माण-कार्य के बाद यह दो मंज़िली इमारत १६२८ में पूर्ण हुई। एक दूसरी को काटने वाली संगमरमर की छड़ों वाली खिड़कियां और मूल्यवान जड़ाव का काम विशुद्ध फ़ारसी कला के नमूने हैं। भारत में बहुत वर्षों पहले भी पत्थर के जड़ाव का काम होता था, किन्तु यहां पहले-पहल फ़ारसी बरतनसाज़ी की सजावट की सीधी नकल का प्रयत्न होता हुआ पाते हैं। फ़ारसी कला के सभी परिचित प्रतीक, जीवन का वृक्ष, तथा अन्य फूलों के वृक्ष, सरो के वृक्ष, फूलों के गुलदस्ते, फलों तथा गुलाबपाशों आदि के चित्र यहां हू-ब-हू उसी प्रकार उतारे गए हैं, जैसे फ़ारसी मीनाकारी के टाइलों में मिलने हैं। विन्यास और रंग दोनों में ही सम्पूर्ण व्यवस्था अत्युत्तम हैं। चित्रित सजावट के रंग आदि मकबरे के भीतरी भाग में, जहां ऐत्मादुद्दौला और उसकी पत्नी दफ़न हैं। अधिक सुरक्षित हैं जब १८५७ की राजनीतिक परिस्थितियों में अराजकता फैल गई, तो असीम दुःख की बात है कि इस भवन के बाहरी चित्रों में रंगरूप को जंगलीपना अपना लेने वाले जाटों ने विनष्ट कर दिया।

चीनी का रोज़ा

ऐत्मादुद्दौला के मकबरे के निकट ही, और नदी की उसी ओर, एक शायर शुकुल्ला का ध्वस्त मकबरा स्थित है। बाद में चल कर वह अफज़लखां के नाम से प्रसिद्ध हुआ और उसने यह मकबरा उस समय बनवाया, जब वह शाहजहां का अर्थमंत्री था। स्थानीय क्षेत्रों में इस स्थान को चीनी का रोज़ा कहते हैं। इसके बहुत कुछ अवशेष ऐसे शेष हैं, जो यह प्रकट करते हैं कि कभी यह पूरी तौर से सुन्दर फ़ारसी मीनाकारी के टाइल-कार्य से आच्छादित था और इसका प्रभाव उस समय कितना अधिक रहा होगा यह केवल कल्पना करने की चीज है।

राम बाग़

चीनी का रोज़ा से ज़रा ही आगे चलकर एक शानदार बाग़ नज़र आता है, जिसके बारे में कहा जाता है कि इसकी योजना तथा रोपण प्रारम्भिक रूप से बाबर के हाथों हुआ था। यह बाग़ फलों के वृक्षों तथा फूलों से पूर्ण था। इसकी पूरी चर्चा बाबर ने अपने स्मृतिग्रन्थ "तुज़ुके बाबरी" में की है। पहले बाग़ के अब कुछ ही अंश बाकी रह गए है, किन्तु अब भी चबूतरे, फौव्वारे, जलमार्ग तथा छोटे-छोटे जलप्रपात विद्यमान हैं, जिनकी योजना इतनी चतुराई से बनाई गई थी कि जब पानी बहता है, तो उससे उत्पन्न ध्वनि से पहाड़ी झरनों की मर्मर ध्वनि का भान होता है। नदी के किनारे पर पुराना कुवाँ और मंडप अब भी हैं, यद्यपि मँडपों में अब आधुनिक परिवर्तन हो गए हैं।

ज़ोहरा बाग़

बाबर की लड़कियों में से किसी एक की याद में यह वाटिकागृह बना था और कहा जाता है कि कभी जलमार्गों को पानी देने के लिए इस में कम से कम साठ कुयें थे।

अकबर का मक़बरा

आगरा से दिल्ली जाने वाले मार्ग पर पाँच मील चलकर, सिकन्दरा में, अकबर का शानदार मकबरा बना हुआ है। यह स्मृतिचिह्न अपूर्व गरिमा से युक्त है। एक बड़ी सीमा तक इसकी योजना तथा निर्माण स्वयं अकबर के द्वारा ही कार्यान्वित हुए थे। इसकी योजना अन्य सभी मुसलमानी स्मृति-चिह्नों में पूर्णतः भिन्न

Agra—The tomb of 'Itmad-ud-Daulah'

आगरा—एत्मादुद्दौला का मक़बरा।
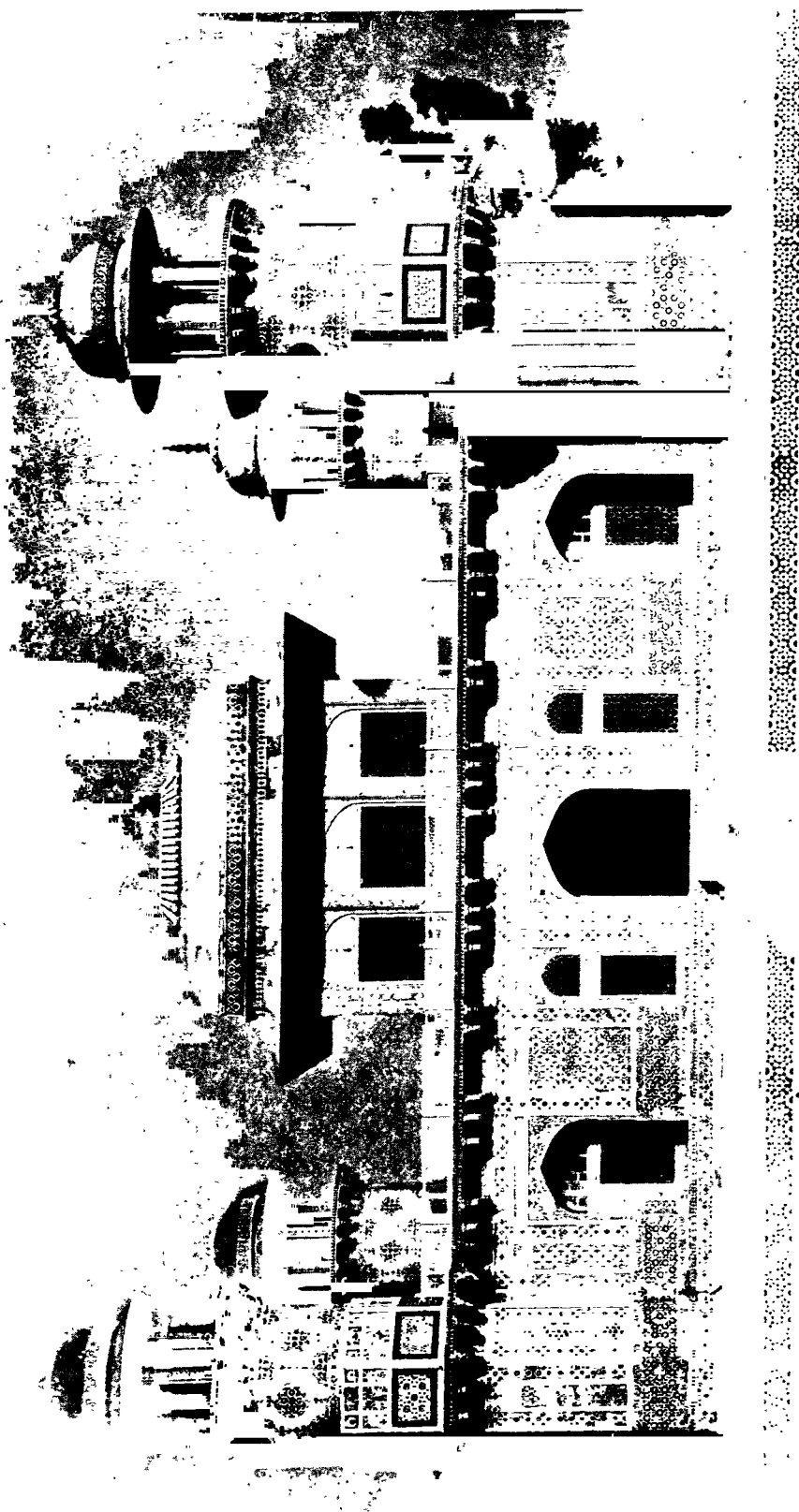
Agra. The Mausoleum of Akbar, Entrance gateway.

आगरा — अकबर की समाधि — मुख्य प्रवेश द्वार ।

है और इस्लाम के सिद्धान्तों के विरुद्ध, मकबरे का सिरा मक्के की ओर न करके उदीयमान सूर्य की ओर रखा गया था।

एक बहुत विस्तीर्ण बाग के बीच में मकबरे की इमारत स्थित है और वह चारों ओर से ऊँची ऊँची मुंडेरदार दीवारों से घिरी हुई है। प्रत्येक दीवार के मध्य भाग में एक सत्तर फीट ऊँचा प्रभावशाली दरवाजा है। चमकदार टाइलों की सजावट उनके सौंदर्य को चार चाँद लगा देते हैं। मुख्य प्रवेशद्वार पर लम्बी-लम्बी दीवारें अत्यन्त दर्शनीय हैं। इसके ऊपर एक लेख खुदा हुआ है कि इस मकबरे का निर्माण जहाँगीर के द्वारा सन् १६१३ में पूर्ण हुआ। मकबरे के निर्माण-कार्य में व्यय हुए धन का परिमाण रेकर्ड में पंद्रह लाख रुपए दर्ज है।

सफ़ेद संगमरमर के जिस मंच पर मकबरा पांच चबूतरों पर अवस्थित है, उसकी आकृति पिरामिड की भांति है और वह लंबाई और चौड़ाई में चार सौ फ़ीट है। नीचे की मंज़िल, जो ऊंचाई में तीस फ़ीट है, हर तरफ़ से ३२० फ़ीट लंबी है। गुंबदों की पंक्तियों से घिरे हुए खुले तथा चौड़े मेहराबों से इसकी रचना हुई है। हम मकबरे के अन्दर एक केन्द्रीय मेहराबदार दरवाज़े में से हो कर जाते हैं और एक बरामदे में पहुँचते हैं, जो नीले और सुनहरी रंग के चित्रों से बहुतायत के साथ सजा हुआ है। इसके भीतर से एक मार्ग उस ऊंची छत वाले कक्ष में पहुँचता है, जहां एक सीधी-सादी सफ़ेद संगमरमर की कब्र के भीतर गौरवशाली सम्राट् के लौकिक अवशेष रखे हैं। दूसरी, तीसरी और चौथी अटारी की कुल ऊँचाई सौ फ़ीट है और इनकी रचना छोटी छोटी मीनारों के खंभों, लाल पत्थर के मेहराबों और स्तूनों से हुई है। इन में से प्रत्येक ज्यों-ज्यों ऊंचे उठता चला जाता है त्यों-त्यों आकार में घटता जाता है। सभी मंजिलों में ज़ीने के द्वारा पहुँचा जा सकता है और यह ज़ीना उस आख़िरी मंजिल तक चला गया है, जो आकाश की ओर खुली हुई है। यह चारों ओर से उन कक्षों के द्वारा घिरी हुई है, जिनकी बाहरी मेहराबें सुन्दर ढंग से संपन्न की हुई अत्युत्तम संगमरमर की कारीगरी से पूर्ण हैं। बीच में एक उभरे हुए मंच पर एक दूसरी कब्र बिल्कुल सब से नीचे वाली मंज़िल की कब्र की भांति बनी हुई है, लेकिन नीचे वाली कब्र असली कब्र है। यह प्रतिरूप बिल्कुल निर्दोष सफ़ेद संगमरमर का बना हुआ है और सब ओर से फूलों व कलियों की रेखाओं को प्रकट करती हुई अरबी ढंग की चित्रकारी से, उत्तम प्रकार की पच्चीकारी के द्वारा चित्रित है। कब्र के सिरे और पांव की ओर "अल्लाहो अकबर" तथा "जल्ले जलालहु" वाक्यांश खुदे हुए हैं।

संपूर्ण इमारत सौजन्यता से पूर्ण विचार की छाप छोड़ती है और अकबर तथा उसके तमाम जीवन के काम के अनुरूप ही है।

कांच महल

अकबर के मकबरे की सीमाओं से बाहर, मुख्य द्वार से जरा सा बाईं ओर हट कर एक अन्य दो मंज़िला भवन है, जिसे कांच महल कहा जाता है। एक देहाती निवास स्थान के रूप में यह जहांगीर के द्वारा बनवाया गया था। खुदाई, पत्थर की पच्चीकारी और एनेमल किए हुए टाइल मन पर प्रसन्नता की लहरें उत्पन्न करते हैं। उस ज़माने के घरेलू स्थापत्य का यह एक सुन्दर नमूना है।

सूरजभान का बाग़

इससे कुछ ही आगे ऊपर दिए गए नाम से एक बाग है, जिस में उसी ज़माने की एक अन्य दो मंज़िला इमारत है, किंतु यह शैली में बहुत गिरी हुई है।

मरियम ज़मानी का मक़बरा

इस से भी आगे, मथुरा की दिशा में, एक अन्य इमारत है, जिसके बारे में ख्याल किया जाता है कि वह सिकदर लोदी का बाग़ रहा होगा। कहा जाता है कि अकबर की एक बेगम, मरियम ज़मानी, को इसमें दफ़न किया गया था। वह एक पुर्तगालिन थी और ईसाइयों को सहन करने के मामले को लेकर शहंशाह को प्रेरित करते रहने में उसका काफी प्रभाव चलता था।

कंधारी बेगम का मक़बरा

कंधारी बाग़ के नाम से प्रसिद्ध बाग में शाहजहां की बेगमों में से एक, कंधारी बेगम, का मकबरा है। अब यह बाग भरतपुर के राजा के द्वारा देहाती निवास स्थान के रूप में प्रयोग किया जाता है।

ताजमहल

किले से एक मील दूर, जमना नदी के किनारे, ताजमहल का मनोरम मकबरा स्थित है। इसे शाहजहां ने अपनी पत्नी अजमंद बानो बेग़म के सम्मान में निर्मित कराया था। यही बेगम अपने रूप व गुणों के कारण मुमताजमहल अथवा ताजमहल के नाम से प्रसिद्ध हुई जिसका अर्थ है "महल में अद्वितीय"।

सँसार में कोई इमारत ऐसी नहीं है, जिसके इतनी बार चित्र खिंचे हों, फोटो बने हों, अथवा मॉडल बनाए गए हों।

मुमताजमहल शहंशाह की अत्यन्त प्रिय बेगम थी। उसका पिता जहांगीर की बेगम, मल्का नूरजहाँ, का भाई था। इस प्रकार वह जहांगीर के प्रधान मन्त्री, ऐत्मादुद्दौला की पोती थी, जिसका सुन्दर मकबरा आगरा में जमना नदी के दूसरे किनारे पर स्थित है।

ताजमहल बेगम अपने पति की अनवरत साथिन थी और सैनिक मोर्चों पर भी उसके साथ रहा करती थी। राजकीय उत्तरदायित्वों में उसका बहुत बड़ा हाथ था और अपनी दानशीलता के कारण वह प्रजा में भी अत्यंत लोकप्रिय हो गई थी। जिन अपराधियों को प्राणदंड मिलता था उन्हें क्षमा कराने में वह अपना काफी असर काम में लाती थी।

इस बेगम से शाहजहाँ को चौदह संतानें प्राप्त हुई। इसी प्रकार अपने चौदहवें बच्चे को जन्म देने के बाद, बुरहानपुर के निकट एक सैनिक शिविर में उसका देहान्त होगया। शहंशाह शोक से अभिभूत हो गया और उसकी अन्तिम इच्छा के अनुसार उसने फिर विवाह न करने तथा उसकी स्मृति को बनाए रखने के लिए

Agra—The Taj Mahal as seen from the garden

आगरा—उद्यान से दृष्टिगत ताजमहल का दृश्य।

उसी के गौरव के योग्य एक मकबरा बनाने का निश्चय किया । उसने इस भवन को निर्मित कराने में पचास लाख रुपया व्यय किया ।

मृत बेगम के शव को राजधानी में ले आया गया क्योंकि वहीं पर उसके मकबरे के लिए उपयुक्त भूमि चुनी गई थी । जमना नदी के मोड़ पर स्थित राजा जयसिंह का एक बाग लिया गया और उसमें फूलों की झाड़ियाँ तथा सरो के पेड़ इत्यादि लगाए गए । यह वह युग था जब स्थापत्य के ऊपर बहुत जोर दिया जाता था । अकबर के समय से ही आगरे की राजधानी सर्वोत्तम भवन निर्माताओं, राजों, कलाकारों तथा कारीगरों को काम, नाम तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए आकर्षित करती रही थी । मुगल साम्राज्य के साधन अब तक अत्यन्त विस्तृत हो चुके थे और बिना धार्मिक प्रवृत्तियों का विचार किए, राजकीय संरक्षण प्रत्येक के लिए खुला था । इसलिए प्रत्येक व्यक्ति एक ऐसे स्मारक की योजना बनाने में जुट गया, जैसा शाहजहाँ अपनी प्रिय पत्नी के सम्मान में बनवाने की कामना करता था । उसके साम्राज्य के सर्वोत्तम भवन-निर्माताओं की एक सभा बैठी और एक ऐसा भवन बनाने के लिए चित्र तैयार किए गए । एक शिलालेख की साक्षी के अनुसार, लाहौर के उस्ताद अहमद के द्वारा प्रस्तुत किया हुआ डिज़ाईन अन्त में स्वीकार कर लिया गया । यह इमारत पूर्णतः भारतीय है, क्योंकि चाहे भवन-निर्माता किसी दूसरे देश से ही आया हो, किन्तु बादशाह ने उसके देश के सभी नमूनों को अस्वीकार कर दिया और उन्हीं नमूनों पर ध्यान दिया, जो स्वयँ भारत की उपज थे । मिस्र, स्पेन, अरब या फारस की कोई इमारत पेंट किए हुए टाइलों की सजावट तथा मीनाकारी में चाहे जितनी शानदार हो, किन्तु रचना सौंदर्य, वैज्ञानिक इंजीनियरिंग, कौशलपूर्ण योजना तथा अनूठी कारीगरी से पूर्ण इस भारतीय कलाकृति से उसकी तुलना नहीं हो सकती ।

सौंदर्य के इस चमत्कार का निर्माण करने के लिये दिल्ली, मुलतान और बग़दाद से कुशल संगतराश आये, एशियाई टर्की तथा समरकन्द से गुंबद निर्माता, बग़दाद और कन्नौज से मीना तथा पच्चीकारी के कारीगर, शिलालेख लिखने के लिए शीराज़ से प्रमुख लेख विशेषज्ञ यहां पर आए । शाहजहां के प्रभाव तथा शासन के अन्तर्गत एशिया के प्रत्येक भाग से सामग्री जुटाई गई, जयपुर से सारा संगमरमर, फ़तेहपुर सीकरी से लाल पत्थर, पंजाब से रङ्गबिरंगे पत्थर, चीन से हरा पत्थर तथा स्फटिक, तिब्बत से फीरोज़ा, लंका से वैडूर्य तथा नीलम, अरब से मूंगा व अन्य बहुमूल्य पत्थर, बुन्देलखण्ड से पन्ना से हीरे जवाहरात, तथा फारस से गोमेदक और नीलमणियाँ लाई गई ।

इस प्रकार शाहजहाँ एक ऐसी स्थिति में था कि एक सच्चे प्रेम के योग्य इमारत बनवाने की अपनी महत्वाकांक्षा को ठोस रूप दे सके । कहा जाता है कि उसने इसका निर्माण कराने में तीस हज़ार आदमी लगाए और इसके पूर्ण होने में सतरह साल लगे (१६३१ से १६४८ तक) । इस सब परिश्रम और व्यय का परिणाम एक ऐसे भवन के रूप में सामने आया, जो संसार भर में स्थापत्य का एक सुन्दरतम नमूना है । सँगमरमर से निर्मित इसकी मुख्य इमारत ही अद्वितीय नहीं है, बल्कि इसकी विशाल सीमायें, विशाल मस्जिद, इसके केन्द्र तथा भुजाओं के आधारभूत, मँच, जलाशय, जलमार्ग और पास में ही प्रवाहित नदी, इन सब वस्तुओं की पूर्णता इस महान इमारत को सर्वगुणों से विभूषित कर देती है । प्रत्येक का अपना एक अलग व्यक्तित्व तथा संगीत है, प्रत्येक अपने पास के अंग को एक ऐसा आधार प्रस्तुत करता है कि संपूर्ण रचना से एक महान् एक-रूपता का बोध होता है ।

इस भवन का आकर्षण साल के साल भर आगरा में यात्रियों का एक तांता लगाए रखता है। कौन ऐसा है, जिसने इसके बारे में सुना हो और देखने की इच्छा न की हो? कौन ऐसा है, जिसने एकबार इसे देख लिया हो और दोबारा देखने की कामना न की हो? कोई चीज़ इस स्थान में ऐसी है, जिसकी व्याख्या अथवा विश्लेषण करना कठिन है, जो इसे स्थापत्य के अन्य नमूनों से अलग करती है। ताजमहल में हम उस बेगम के नारीत्व में निहित गौरव और सौंदर्य की एक झलक देखते हैं, जिसकी स्मृति में शहंशाह शाहजहां ने इस भव्य भवन की रचना कराई थी। इस अद्वितीय स्मारक की प्रत्येक रेखा, प्रत्येक बारीकी, इसका संपूर्ण आकार अपनी बेगम के प्रति शाहजहाँ के प्रेम और अनुभूति को प्रकट करता है।

प्रवेशद्वार भवन के सर्वथा उपयुक्त है। ग्यारह छोटे-छोटे और दो बड़े-बड़े सफ़ेद संगमरमर के गोलक उस लाल पत्थर की इमारत के सामने सजे हुए हैं तथा इतनी ही संख्या में उसके पीछे हैं। इस द्वार की यह छटा मुख्य मकबरे के हिमश्वेत संगमरमर से प्रभावशाली विरोधाभास प्रकट करती है। इस दरवाज़े के अनुपात अपने में संपूर्ण हैं। इसकी संपूर्ण व्यवस्था अत्यंत प्रभावकारी है। खास मेहराब के ऊपर अरबी में अंकित लंबा लेख अतिथि को "जन्नत के बाग़" में प्रवेश करने का निमंत्रण देता है। यह प्रवेश द्वार निकट से निरीक्षण करने की वस्तु है।

दरवाज़े से होते हुए, सरो के वृक्षों के बीच से गुज़रती हुई एक रविश हमें ताज की ओर लेजाती है। इस पर चलते हुए, पास ही बहती हुई एक चौड़ी नहर के शांत जल में इनका प्रतिबिंब निरखने का आनंद लिया जा सकता है। सभी बड़े-बड़े कला के नमूनों की भांति, ताज का सौंदर्य भी उसकी सादगी के भीतर छिपा है।

मध्य भाग में स्थित जलाशय से ताज के एक निकटतर दृश्य का आनन्द भी लिया जा सकता है। स्वयं मुमताज़ की पोशाक के ऊपर शोभित कशीदाकारी की भांति हम ताज के पत्थरों की सुन्दरतम पच्चीकारी की सज्जा स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। एक चौकोर संगमरमर के मंच के मध्य भाग में खास मकबरा स्थित है, जिसके चारों कोनों पर चार इकहरे आकार की मीनारें खड़ी हैं।

ताज के मध्य भाग में स्थित कक्ष में मुमताजमहल की कब्र और उसके बराबर में उसके प्रियतम शहंशाह शाहजहां की कब्र है। इस स्थान के पवित्र सौंदर्य का बखान करना कठिन है। ये कब्रें संगमरमर की मनोरम चादर से ढकी हुई हैं। उसकी संपूर्ण सज्जा, और बारीक बेलबूटों की नक्काशी किसी प्राचीनकाल के उत्तम गोटे की भांति दिखाई पड़ती है, जिसे मानो पत्थर में परिवर्तित कर दिया गया हो। कहा जाता है कि पहले इन कब्रों को कीमती पत्थरों से जड़ी हुई सोने की जाली से ढका गया था। वह अब गायब हो गई है। एक मोतियों की जाली, जिसका मूल्य लाखों में कूता गया था, कब्रों को ढकने के लिए बनाई गई थी। सन् १७२० ईसवी में अमीर हुसैनअली खां इसे आगरा की लूट के अपने भाग के रूप में ले गया था। ताजमहल पर हुआ संपूर्ण वास्तविक व्यय एक करोड़ पचासी लाख रुपए था, जो उन दिनों के लिए भी एक चौंका देने वाली रकम थी।
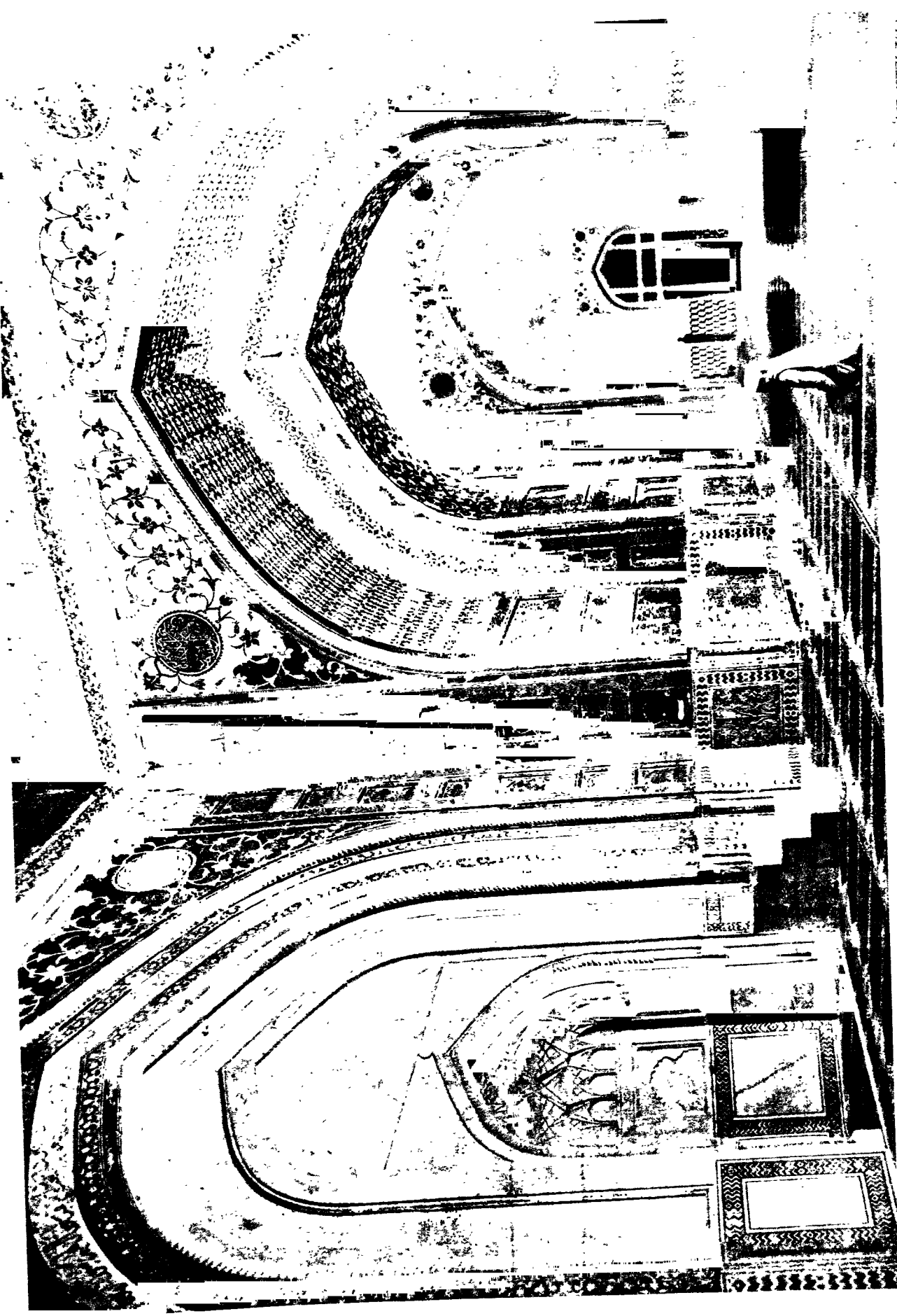
Agra—The Taj Mahal Mosque interior of prayer chamber

आगरा—ताजमहल - मस्जिद के भीतर वन्दना-कक्ष।
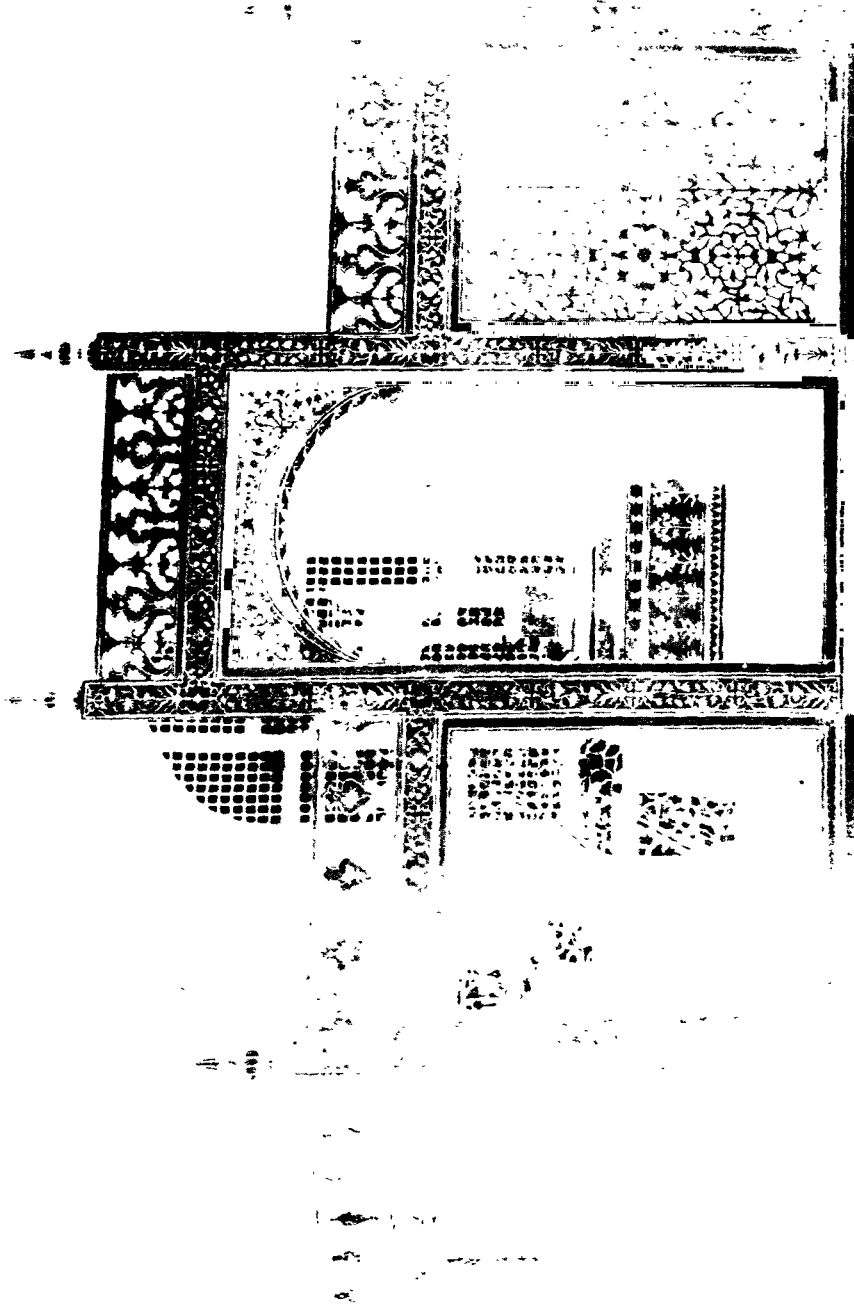
Agra—The Taj Mahal. Marble screen.

आगरा—ताजमहल – संगमरमर का चित्रित पट।

चांदनी में ताजमहल का आकर्षण अपूर्व क्षमता से युक्त हो जाता है। उस समय यह एक आकाशपिंड की भांति मालूम पड़ता है। निःसंदेह इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि सफ़ेद संगमरमर के ऐसे विशाल पिंड के ऊपर चांदनी का हल्का प्रकाश पड़ता है, किन्तु इसके डिज़ाईन की अत्युत्तम रेखाओं का भी इस में कम योग नहीं है। स्वभावतः ही ताज ने बड़े परिमाण में विचारपूर्ण और किसी कदर भावनापूर्ण काव्य की प्रेरणा प्रदान की है।

ताज की दोनों तरफ लाल पत्थर की बनी हुई मस्जिद तथा 'जवाब' में भी वही शैली अपनाई गई है, जो प्रवेश द्वार के भीतर है। अंतरीय भाग मसाले के बेलबूटों और उत्तम पलस्तर के काम से सज्जित है। पश्चिम की दिशा वाली इमारत केवल नमाज़ के लिए बनवाई गई थी, और जवाब, जो जमातखाना के नाम से प्रसिद्ध है, नमाज़ से पहले लोगों के एकत्र होने और वार्षिक समारोहों पर उपयोग के लिए बना था।

मस्जिद के सामने वाले मंच से ताज, नदी और दूरस्थित किले के उत्तम दृश्य का आनन्द लिया जा सकता है।

फ़तेहपुर सीकरी

यदि आगरा से २२ मील की दूरी पर स्थित फ़तेहपुर सीकरी को छोड़ दिया जाए, तो आगरा की यात्रा अपूर्ण मानी जाएगी। यहीं पर अकबर ने एक पुत्र तथा उत्तराधिकारी के जन्म की स्मृति में एक नगर बसाया था। कहा जाता है कि यह इसी स्थान के एक साधू की दुआओं का परिणाम था कि अकबर को अपनी बेगम से एक पुत्र की प्राप्ति हुई।

कहानी इस प्रकार है कि शहंशाह की राजपूत पत्नी से प्राप्त दो संतानें हाल ही में मर चुकी थीं और अकबर सिंहासन के एक उत्तराधिकारी के लिए चिंतित था। शेख सलीम चिश्ती नामक एक साधू सीकरी में एक टीले पर बनी हुई झौंपड़ी मे रहा करता था। अकबर प्रायः ही उसकी दुआएं लेने के लिए उसके पास जाया करता था। अकबर की चिंतित मुद्रा ने फ़कीर के पुत्र के मन पर बड़ा भारी प्रभाव डाला। उसे अपने पिता से मालूम हुआ कि उस समय तक अकबर के सारे बच्चे बचपन में ही मरते रहेंगे, जब तक कि कोई व्यक्ति ऐसा न मिल जाए, जो बदले में अपने बच्चे को दे दे। इसके साथ ही उस लड़के ने मृत्यु को अंगीकार करने की अपनी इच्छा को प्रकट कर दिया और उसका ऐसा करना था कि वह तुरंत मर गया। अकबर को अपनी रानी के साथ सीकरी में आ कर रहने की सम्मति दी गई। उसने ऐसा ही किया। अगले वर्ष एक लड़के का जन्म हुआ और उसके कृतज्ञ माता पिता ने उस दरवेश के नाम पर ही उसका नाम सलीम रखा।

शहज़ादा सलीम जीवित रहा और बाद में चल कर वह शहंशाह जहांगीर के नाम से विख्यात हुआ। उसने अपनी पुस्तक "तुज़ुके जहांगीरी" में इन सब परिस्थितियों का वर्णन किया है, जिसमें लिखा है : "मेरे सम्मानित पिता ने मेरे जन्मस्थान सीकरी के गांव को अपने लिए भाग्यशाली समझ कर, इसे अपनी राजधानी बनाई, और पंद्रह साल के भीतर भीतर वे पहाड़ियां और मरुभूमि, जहां भयानक पशु विचरते थे, एक ऐसे शानदार शहर के रूप में बदल दिए गए, जिस में असंख्य बाग़, शानदार इमारतें और मंडप, तथा आकर्षण व सौंदर्य से पूर्ण अन्य अनेक वस्तुएं थीं।"

सन् १५७० ईसवी में सीकरी मुग़ल साम्राज्य की राजधानी बना। गुजरात विजय के बाद इस गांव का नाम फ़तेहपुर रखा गया। उस समय के एक अंगरेज़ यात्री के कथनानुसार "यह शहर लंदन से भी कहीं अधिक बड़ा था।" सतरह साल तक अकबर ने अपना दरबार यहां किया। इस स्थान को एक झिर्रीदार प्राचीर से सुरक्षित कर दिया गया और उस में अनेक बुर्जियां बनवाई गईं। इस प्राचीर में नौ दरवाज़े थे, जो प्राचीर की तीन तरफ़ बने हुए थे। चौथी तरफ एक बनावटी झील बनवाई गई थी, जो अब सूख गई है। टीले पर शाही इमारतों का एक समूह खड़ा कर दिया गया, जिसमें दरबार-हॉल, जन-कार्यालय, शाही महल, स्नानागार, अस्तबल, जलयंत्र इत्यादि थे। मस्जिद के साथ लगी हुई एक संगमरमर की शानदार समाधि उस दुरवेश के लिए बनवाई गई, जिसकी दुआओं के कारण शहंशाह अकबर को पुत्र की प्राप्ति हुई थी। किंतु यह सब गौरव अल्प काल के लिए ही था, क्योंकि पानी की कमी के कारण इस स्थान को बाद में त्याग दिया गया। लेकिन अकबर की राजधानी यहां से लाहौर को स्थानांतरित होने के पीछे यह कारण वास्तविक प्रतीत नहीं होता। जो भी हो, अकबर ने सीकरी को बिल्कुल ही नहीं त्याग दिया, क्योंकि खानदेश और गुजरात के विजय-स्मारक के रूप में बुलन्द दरवाज़ा १६०१ ईसवी तक निर्मित नहीं हुआ था।

बुलन्द दरवाज़ा

यह विशाल मेहराबदार दरवाज़ा विगत गौरव का स्मारक है और दक्खिन तथा खानदेश व गुजरात में अकबर की विजयों का स्मरण कराता है। यह सीकरी के ऊपर टीले के बिल्कुल सामने खड़ा है और इसके बिल्कुल पीछे मस्जिद का विशाल आंगन है, जो ऊंचे ऊंचे खंभों की पंक्तियों से विभूषित है। इस दरवाज़े में रचनात्मक तथा सज्जात्मक तत्वों का संयोजन इस प्रकार हुआ कि इसे संसार के सर्वोत्तम दरवाज़ों में से एक बताने वाले व्यर्थ की डींग नहीं हांकते।

यह सड़क से ४२ फ़ीट ऊँचे एक चबूतरे पर खड़ा है। इधर से लेकर उधर तक इसका मुंह १३० फीट चौड़ा है प्रवेश द्वार के सामने के पथ से लेकर इसके कंगूरों पर बनी हुई फूल-पत्तियों तक इसकी ऊंचाई १३४ फीट है जो संसार के किसी भी दरवाज़े की ऊंचाई से अधिक है। इसके आकार-प्रकार के अनुरूप ही इसकी सजावट भी है। लाल पत्थर की ज़मीन पर सफ़ेद संगमरमर की खुदाई तथा पच्चीकारी की हुई हैं। स्थापत्य संबंधी प्रमुख विचार फारस के हैं, किन्तु रचना और सज्जा भारतीय कारीगरी का परिचय देती हैं।

यह अपने में एक संपूर्ण इमारत है। इसके भीतर एक बड़ा हॉल तथा अनेक छोटे-छोटे कक्ष बने हुए हैं, जिनके भीतर से होकर मस्जिद के अन्दरूनी आँगन में पहुंचा जा सकता है। अपने विशाल अनुपातों से यह उसे छिपा लेता है। इस विशाल शाही प्रवेशद्वार का मस्जिद के साथ कोई रचनात्मक संबन्ध नहीं है, क्योंकि दूसरी इमारतों के सामान्य दृश्यों का यह कोई अंग नहीं है। इसे उन इमारतों में अनेक वर्षों बाद सम्मिलित किया गया था। इसके ऊपर से फतेहपुर सीकरी के उजड़े हुए शहर तथा उसके आसपास के देहाती क्षेत्र का पूरा दृश्य दिखाई पड़ता है।

इसके लेखों में शहंशाह अकबर की प्रशंसा लबालब भरी हुई है। एक भावना पूर्ण दार्शनिक विचार इन शब्दों में प्रकट किया गया है : "संसार एक पुल है, इस पर से होकर गुज़र जाइए। लेकिन इस पर घर न
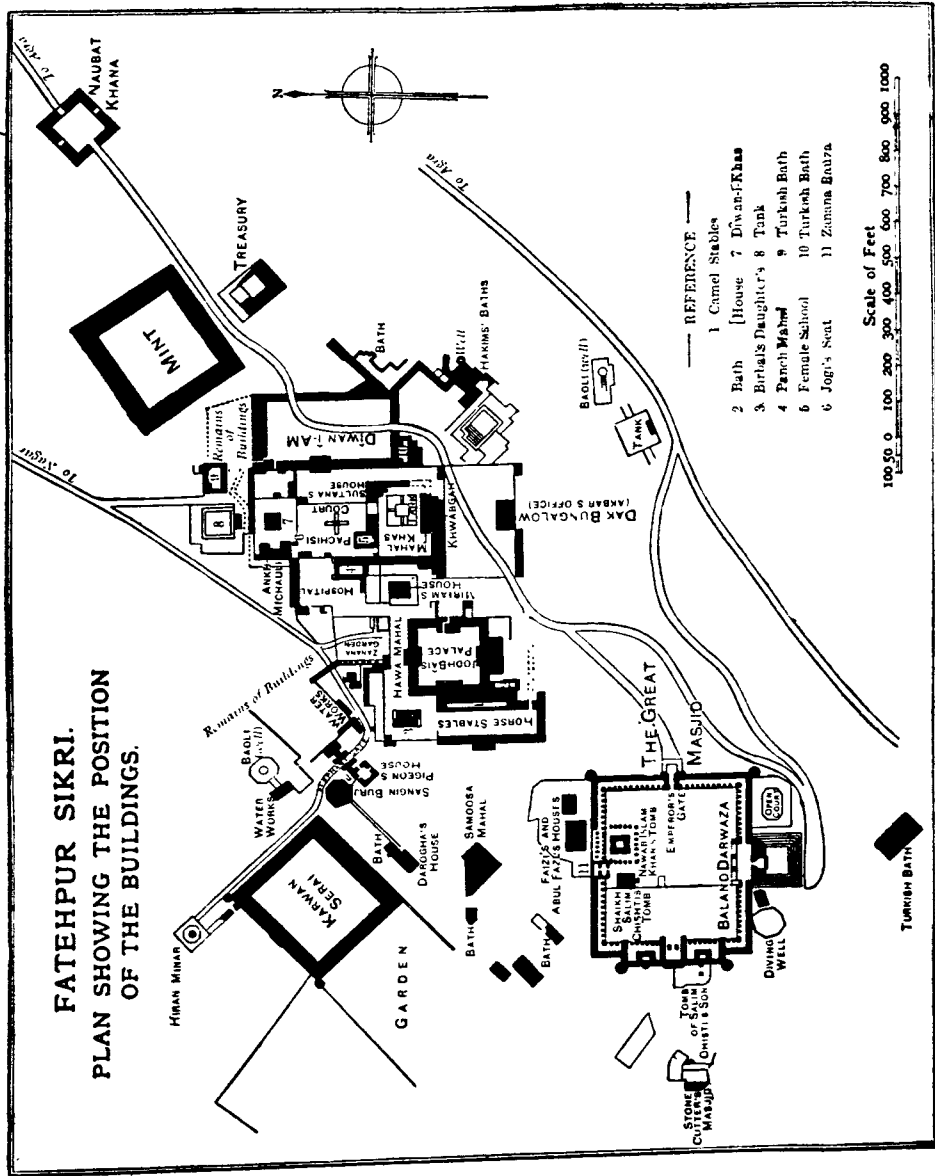
Agra. Fatehpur Sikri, Plan showing the position of the buildings.

आगरा – फतहपुर सीकरी – भवनों की स्थिति प्रकट करने वाला चित्र ।

Fatehpur Sikri—The Buland Darwaza

फतहपुर सीकरी—बुलन्द दरवाजा।
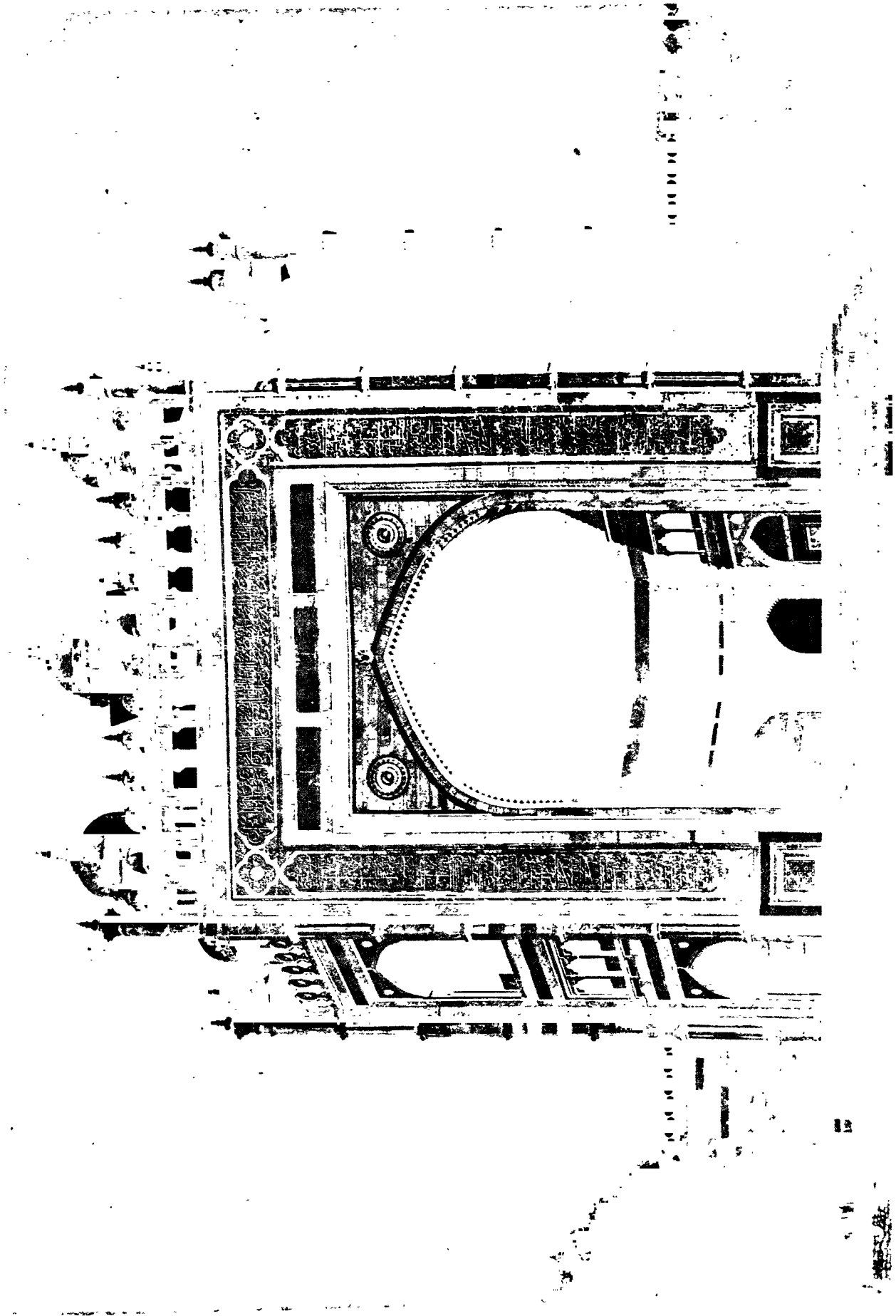
बनाइए। जो मनुष्य एक घंटे के लिए आशाओं को अपने मन में स्थान देता है वह अनन्तकाल के लिए भी आशाओं को संजो सकता है। यह संसार एक घंटे का ही है, इसे भक्ति भावना के साथ बिताइये क्योंकि शेष तो अनदेखा ही है।"

शेख सलीम चिश्ती का मक़बरा

यह दरवेश अकबर का आध्यात्मिक सलाहकार था। उसका मकबरा सफेद संगमरमर का बनवाया गया और उसे सजावट से पूर दिया गया। विस्तीर्ण चौखूंटे आँगन की दाँई ओर स्थित यह मकबरा चांदी की भाँति दमकता है। जिस द्वार से भीतर जाते हैं उसकी जोड़ी आबनूस की बनी हुई है। समाधि एक बरामदे से घिरी हुई है, जो निर्दोष संगमरमर के खँभों से उभरे हुए, विभिन्न आकारप्रकारों में बने, चक्करदार कोनियों के सहारे टिका हुआ है। इन कोनियों की नींव पर घुंडीदार फूल के आकारों से मोखे बनाए गए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि खिड़कियों की पतरी संगमरमर की पटियाओं ने कुशल संगतराश की छेनी के नीचे आकर अपना भार खो दिया हो। ये पटिया पारदर्शी घुंघट की भाँति मालूम होती हैं, जिनके पार से साथ की इमारतों के सीधे खड़े हुए मुंडेरे स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। जाली का काम अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है।

आबनूस और सीप के बने हुए चंदोवे से ढकी समाधि पर अंकित एक लेख के अनुसार शेख सलीम चिश्ती सन् १५७१ ईसवी में (८२ वर्ष की आयु में) इस संसार से बिदा ले गए और इसके लगभग नौ साल बाद उनके सम्मान में निर्मित इस मकबरे का निर्माण-कार्य पूर्ण हुआ।

यह बात अत्यंत मनोरँजक है कि आजकल भी जो स्त्रियां सँतान की कामना से यहाँ आती हैं वे इस मकबरे की खिड़कियों में रँगे हुए कपड़े अथवा रेशम की पट्टियां लटका जाती हैं।

इस से मिली हुई इमारत दरवेश के पोते नवाब इस्माईल खां का मकबरा है। जहांगीर के समय में यह व्यक्ति बंगाल की सूबेदारी के पद तक पहुंच गया था। यह मकबरा लाल पत्थर का बना हुआ है और इस से गंभीरता का प्रादुर्भाव होता है। इस में स्वयं शेख के अतिरिक्त उसके अनेक वंशजों की कब्रें भी बनी हुई हैं। इस से मिली हुई छतों के एक भाग को घेर कर उसके परिवार की स्त्रियों के लिए एक अलग गुंबद बना दिया गया है, जिसे ज़नाना रोज़ा कहा जाता है। इस में जाली का काम संभवतः बाद में किया गया था। यह सम्पूर्ण इमारत पूर्ण रूप से सुरक्षित अवस्था में है।

जामा मस्जिद

मध्यभाग में एक ऊँची भूमि पर स्थित इस भवन का प्रवेश द्वार पूर्वी-मुहाना है। इसके ऊपर खुदे हुए एक लेख में बताया गया है कि यह मस्जिद मक्का की मस्जिद की नकल पर बनाई गई है। यद्यपि सामान्यतः इसका आकार-प्रकार उसी पुरानी मुसलमानी इमारत के आधार पर है, किंतु इसकी बारीकियों में बहुत सी ऐसी हैं, जिन से अकबर की हिन्दू प्रवृत्तियों का पता चलता है। प्राचीन अरबी मेहराबों के साथ मिली हुई हिन्दू रचनाविधि तथा नीचे के लंबे मार्गों का दृश्य विशिष्ट रूप से प्रभाव डालता है।

नमाज़घर की लम्बाई २८८ फ़ीट और चौड़ाई ६५ फीट है। मध्यभाग में स्थित मुख्य कक्ष के ऊपर ४१ फीट व्यास का एक गुम्बद है, जो सामान्यतः भारतीय आकृति और रचना पर बना है, किंतु नींव

पर चल कर कुछ अरबी शैली पर झुक गया है। उसके बराबर में स्थित दो कक्षों के ऊपर भी २५ फीट व्यास के इस प्रकार के गुंबद हैं। कक्ष के शेष भाग पर एक सपाट छत है, जो हिन्दू आकार-प्रकार के खंभों तथा कोनियों के आधार पर टिकी है। चौखूंटे आंगन की लम्बाई उत्तर से दक्षिण को ३५९ फीट और पूर्व से पश्चिम को ४३८ फीट है।

मुख्य मेहराबदार दरवाज़े पर खुदे एक लेख के अनुसार मस्जिद का निर्माण सन् १५७१ ईसवी में पूर्ण हुआ था। इस विशाल मस्जिद के पीछे की ओर एक कब्रिस्तान है, जिसमें शेख सलीम चिश्ती के अवयस्क लड़के का मकबरा भी है वहीं पर एक छोटी मस्जिद भी है, जिसे संगतराशों की मस्जिद कहा जाता है। यह मस्जिद गरीब कारीगरों ने इस दरवेश के सम्मान में बनाई थी। वह वास्तविक कोठरी भी यहाँ देखने को मिल सकती है जिसके बारे में कहा जाता है कि उसी के भीतर वह दरवेश रहा करता था।

अकबर का दफ़्तर

यह भवन शहंशाह की रुचि का एक उत्तम नमूना है। हिन्दू डिज़ाईन तथा रचना विधि के आधार पर निर्मित इस भवन में उन अरबी सजावट की बारीकियों का मिश्रण पाया जाता है, जो उस समय के दरबारी प्रचलन से निर्दिष्ट था। यह भवन एक तीन फ़ीट ऊंचे चबूतरे पर बना हुआ है। इस के भीतर एक ४४ फ़ीट लंबी और २८ फ़ीट चौड़ी पंक्ति है, जो एक खंभों की दहलीज़ से घिरी हुई है। इनके भारी स्थापत्य को खुदे हुए कोनियों और माथों ने थाम रखा है। खिड़कियों पर अंतिम रूप से लाल पत्थर की जालीदार चादरों का काम किया हुआ है। दक्खिनी छोर पर बना हुआ एक ज़ीना छत के ऊपर ले जाता है, जहां से चारों ओर अवस्थित भवनों का एक उत्तम दृश्य दिखाई पड़ता है।

महल

दफ़्तरखाने के सामने वाले चौखूंटे आंगन की एक ओर बना हुआ दरवाज़ा अकबर के महल, महले-खास, में ले जाता है। उसके निजी कक्ष एक दो मंज़िली इमारत में बने हुए हैं। उसका पुस्तकालय तथा अत्यंत मूल्यवान सम्पति नीचे की मंज़िल में रखी जाती थी। इसकी दीवारें भारी कौशल के साथ बेलबूटों की चित्रकारी से चित्रित हैं।

ख्वाबगाह

यह शयनकक्ष छत पर बना हुआ एक छोटा कमरा है। यह भी फ़ारसी शैली की मसालेदार चित्र-कारिता से आच्छादित है। अकबर उत्तम कलाओं का एक बड़ा संरक्षक था और बहुत से महान् कलाविदों की सेवाओं का उपयोग कर सकता था। उसके कक्षों के सामने एक वर्गाकार जलाशय है, जिसके बीच में एक चबूतरा बना हुआ है। इस चबूतरे पर पत्थर के चार संकीर्ण मार्गों से होकर जाया जा सकता है। जलाशय पानी से भरा रहता था।

तुर्की सुलताना का घर

यह एक छोटी सी इमारत है, किंतु दूर से देखने पर सभी भवनों से अधिक मनोहर दिखाई पड़ती है। इस में केवल एक ही कमरा है।, जिसके चारों ओर एक बरामदा है पेंटिंग और मुलम्मे इत्यादि के काम के
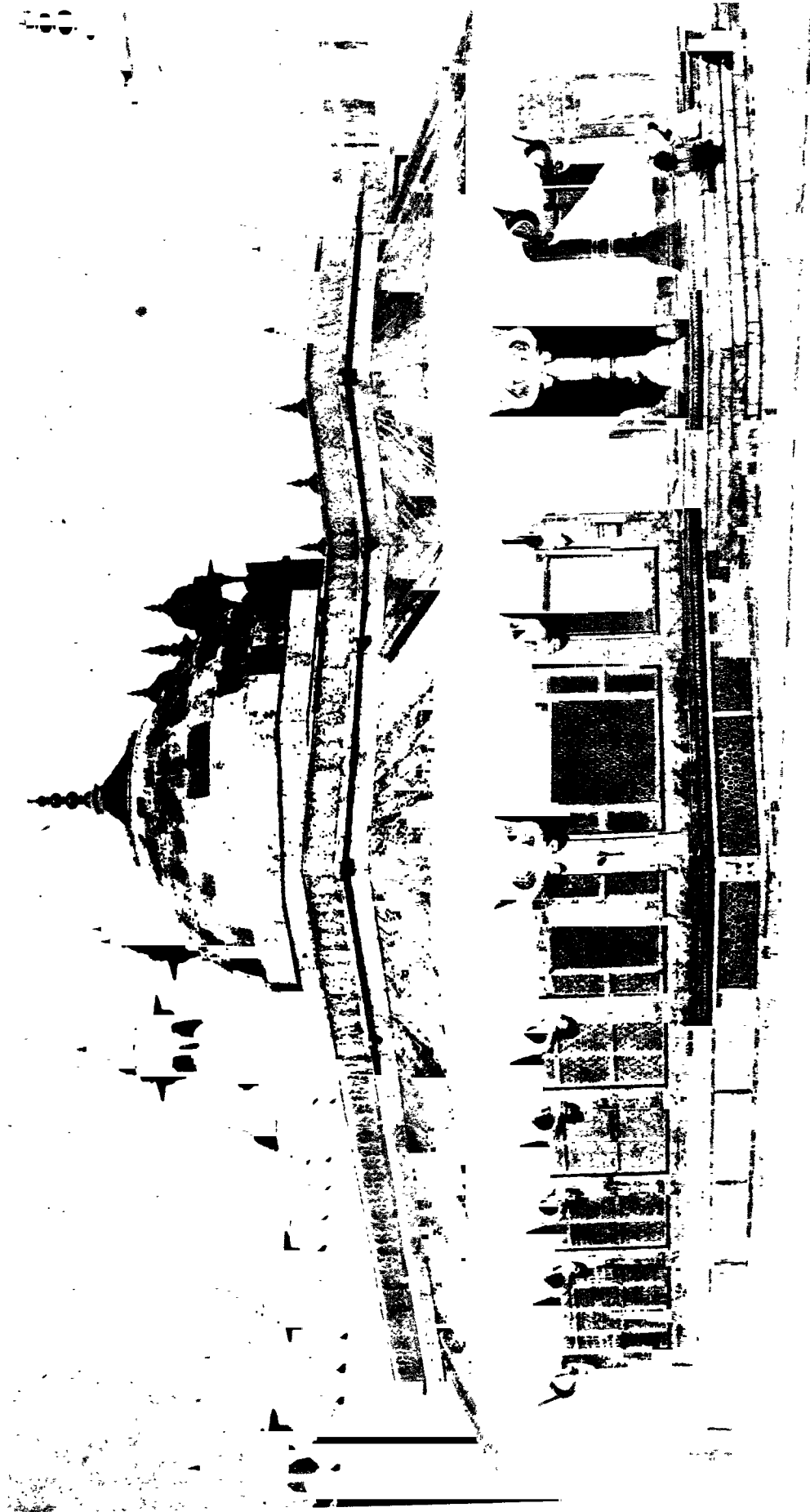
Fatehpur Sikri—The tomb of Sheikh Salim Chishty.

फतहपुर सीकरी—शेखसलीम चिश्ती का मकबरा।

लिए खुदाई का आरम्भ किया गया था, लेकिन वह पूर्ण नहीं हो सका। लकड़ी के चौखटों पर वृक्ष, फूल, चिड़िया और पशुओं के चित्र बने हुए थे, जो सब के सब उन उत्तरकालीन मुगल बादशाहों के अनुगामियों ने नष्ट कर दिए, जो कट्टरपंथी थे।

पंच महल

यह एक पंचमंजिला मंडप है। इसकी योजना ब्राह्मणों अथवा बुद्ध के समय के मठों के सभा-भवनों अथवा विद्यालयों की बनावट के आधार पर रची गई थी। इसके फर्श पर ८४ खंभे खड़े हैं (जो हिन्दुओं की प्रतीक संख्या हैं) नीचे से ऊपर शिखर तक प्रत्येक मंजिल अनुपात के हिसाब से घटती चली गई है और सब से ऊपर चार खंभों पर एक गुंबददार चंदोवा तना है। विभिन्न आकार-प्रकार के सुन्दर डिजाईन यहाँ पर हैं। इसका सामान्य प्रभाव बड़प्पन और शान्ति से पूर्ण है।

मरियम ज़मानी का घर

यह एक शानदार दो मंजिली इमारत है, जिसके आकार-प्रकार में विशिष्ट हिन्दू अनुभूति प्रकट होती है। यह पूरी की पूरी सुन्दरता के साथ चित्रित तथा खुदी हुई थी। बरामदे के कोनियों पर विष्णु के अवतार का चित्र है। अन्य चित्रों में फारसी धर्म शास्त्रों के अन्य विषय तथा शाहनामा की घटनायें चित्रित है।

जोधबाई का महल

यह एक काफी लंबा-चौड़ा राजसी भवन है। इसकी प्राचीन शालीनता तथा सादगी अन्य महिलाओं के भारी सज्जा से पूर्ण निवास स्थानों के साथ एक तीव्र विरोधाभास उपस्थित करती हैं। इसकी स्थापत्य-रचना राजपूती है। महल में एक मन्दिर भी है। एक बरामदे से होते हुए अन्दरूनी चौकोर आँगन में जाने के लिए जो दरवाजा बना हुआ है उसके अनुपात बहुत उत्तम है। पूरे महल की शैली उच्चता तथा पूर्ण रुचि का परिचय देती है। इसका एक रोचक अंग इसका विशेष मंडप है, जिसे 'हवा महल' कहा जाता है। इस स्थान पर रहने वाली राजपूत महिलायें इस मंडप से झील का खुला दृश्य देख सकती थी और ठंडी हवा का आनन्द उठा सकती थीं।

हकीम का हमाम

ये भवन इतने अद्वितीय है कि सारे भारत में इनकी समानता की वस्तुये ढूंढने पर भी मिलनी कठिन हैं। इनमें विस्तीर्ण जलचिकित्सा-सम्बन्धी इमारते बनी हुई है और उन्हें अच्छी रुचि के साथ सजाया गया है। शायद ये सब अकबर के प्रयोग में ही आते होंगे।

पच्चीसी की बिसात

महल के चौकोर आँगन के उत्तरी अर्द्धभाग में बने हुए एक मार्ग पर इसे तराशा गया है। कहा जाता है कि इस स्थान पर अकबर और उसकी रानी गुलाम लड़कियों के रूपमें जीते जागते मोहरों के द्वारा पच्चीसी का खेल खेला करते थे।

आंख मिचौली

दरबार के पश्चिमी सिरे पर बनी हुई यह इमारत स्पष्ट रूप से आंख मिचौली का खेल खेलने के लिए एक भूलभुलैया प्रतीत होती है।

योगी का आसन

एक कोने में एक वर्गाकार चबूतरे पर बनी हुई यह एक अन्य इमारत है। इसके ऊपर एक गुंबदाकार नँदोवा तना हुआ है। इस गोलाकार छत को सम्भालने वाले खुदे हुए कोनिए जैन शैली पर बने हैं। सम्भवतः शहंशाह का कृपा पात्र कोई साधू यहां पर बैठा करता था।

अस्पताल

निकट ही स्थित भवनों की एक लंबी पंक्ति है, जो अस्पताल का काम देते होंगे। पलस्तर की हुई दीवारों पर अब भी मसाले की पेंटिंग के चिह्न मिलते हैं।

दीवाने-आम

इस इमारत का पश्चिमी दालान तथा इसकी छतें महल के चौकोर आंगन के पूर्वी भाग से मिल जाते हैं। एक विस्तीर्ण दरबार का दृश्य इस पर से दिखाई पड़ता है। यह एक चौड़े बरामदे वाला छोटा सा हॉल है। दो छिद्रित पत्थर की चादरों के बीच में एक बालकनी में अकबर उस समय बैठा करता था जब अपने प्रार्थना-पत्र तथा दुःखड़े उसके हजूर में लाने लोगों के विशाल समूह दालान में खड़े होते थे।

दीवाने-खास

यह एक अत्युत्तम इमारत है और उस डिज़ाईन बनाने वाले के कौशल का प्रमाण है, जिसने बाहर से दो मंजिला दिखाई देने वाला लेकिन वास्तव में एक मंज़िला कक्ष बनाया है। यह एक वर्गाकार कक्ष है, जिसकी लम्बाई हर तरफ़ से ४३ फ़ीट है। इसके बीचोंबीच विशालाकार खुदा हुआ खंभा खड़ा है, जिसके सिर पर बृहदाकार माथा विश्व के धारक भगवान विष्णु के सिंहासन का बोध कराता है। यह आदर्श हिन्दू शासक पृथ्वी पर ईश्वर के दूत के रूप में समझा जाता था।

इस सिंहासन पर अकबर प्रत्येक धर्म और विश्वास के विद्वान लोगों के साथ धार्मिक विचारविनिमय करने के लिए बैठा करता था। जालीदार पत्थरों के खुले कटहरों से युक्त चार पुल इस वर्गाकार हाल के कोनों से इस विस्तीर्ण माथे को मिला देते हैं, और वहां से उसको घेरने वाली गैलरियों में पहुंचा जा सकता है। कला और धर्म के मामलों में शहंशाह अकबर अत्यन्त सहनशील था। विचारों की विशाल मौलिकता का प्रदर्शन करने वाली यह इमारत स्वयं कला का एक विशिष्ट अङ्ग है।

राजा बीरबल का घर

फ़तेहपुर सीकरी में यह भवन सब से उत्तम निवास स्थान है इसे राजा बीरबल ने अपनी बेटी के लिए सन् १५७२ ईसवी में बनवाया था यह एक दो मंज़िला मकान है। इसके ऊपरी कमरों के ऊपर अष्ट-

Fatehpur Sikri—The Panch Mahal.
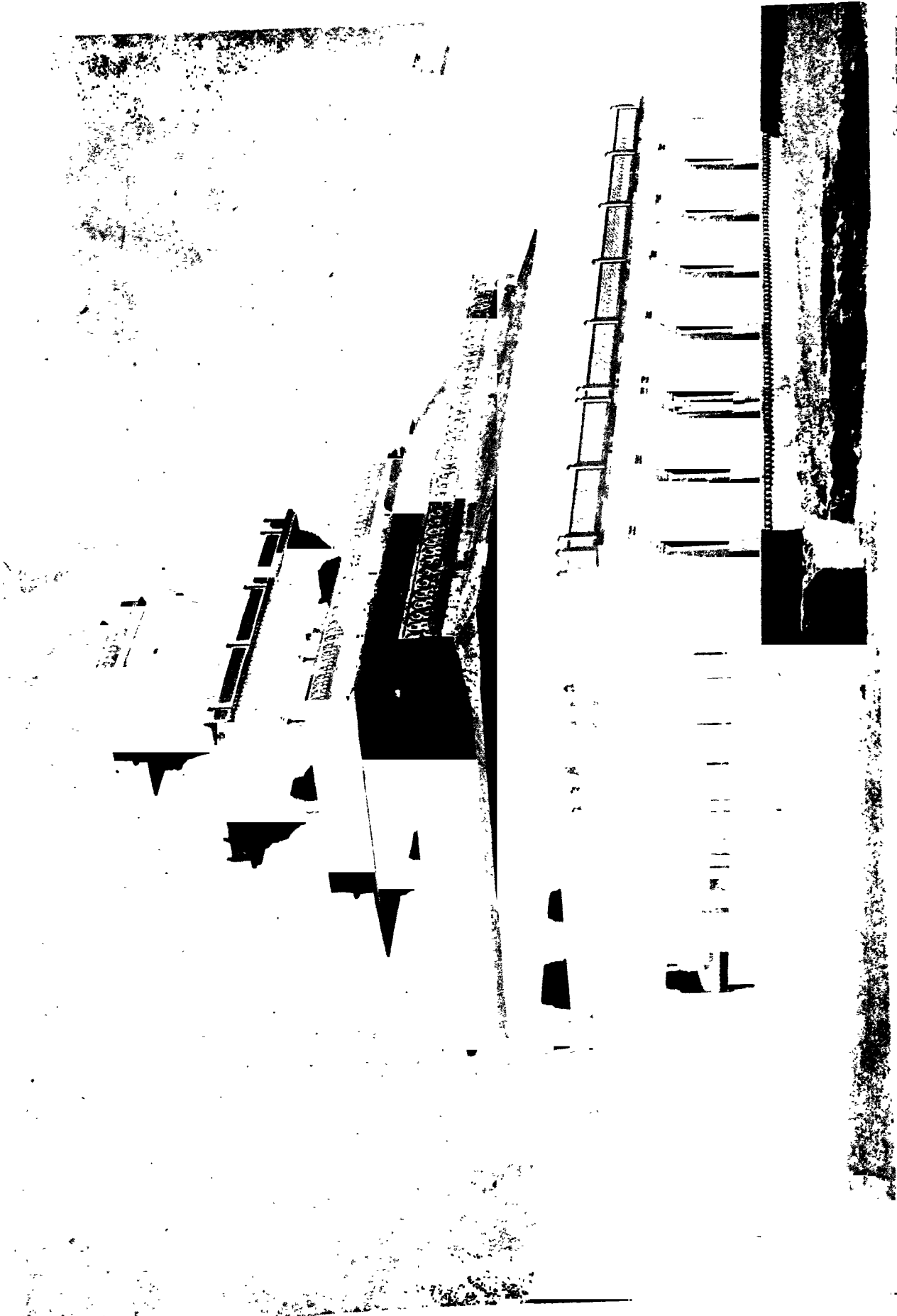
फतहपुर सीकरी—पंच महल ।
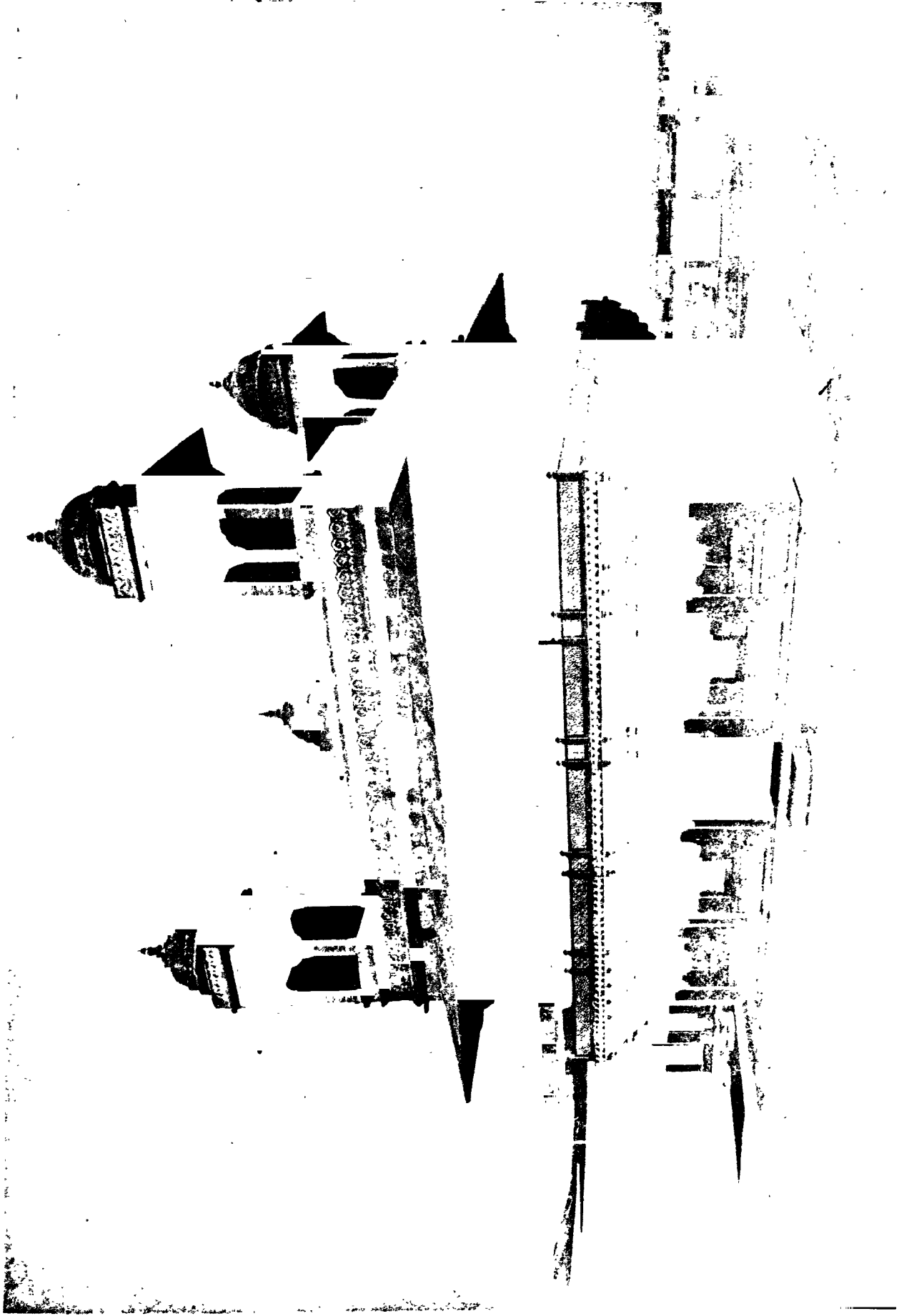
Fatehpur Sikri—Diwan-i-Khas. Exterior view.

फतहपुर सीकरी—दीवानेखास-बाह्य दृश्य।
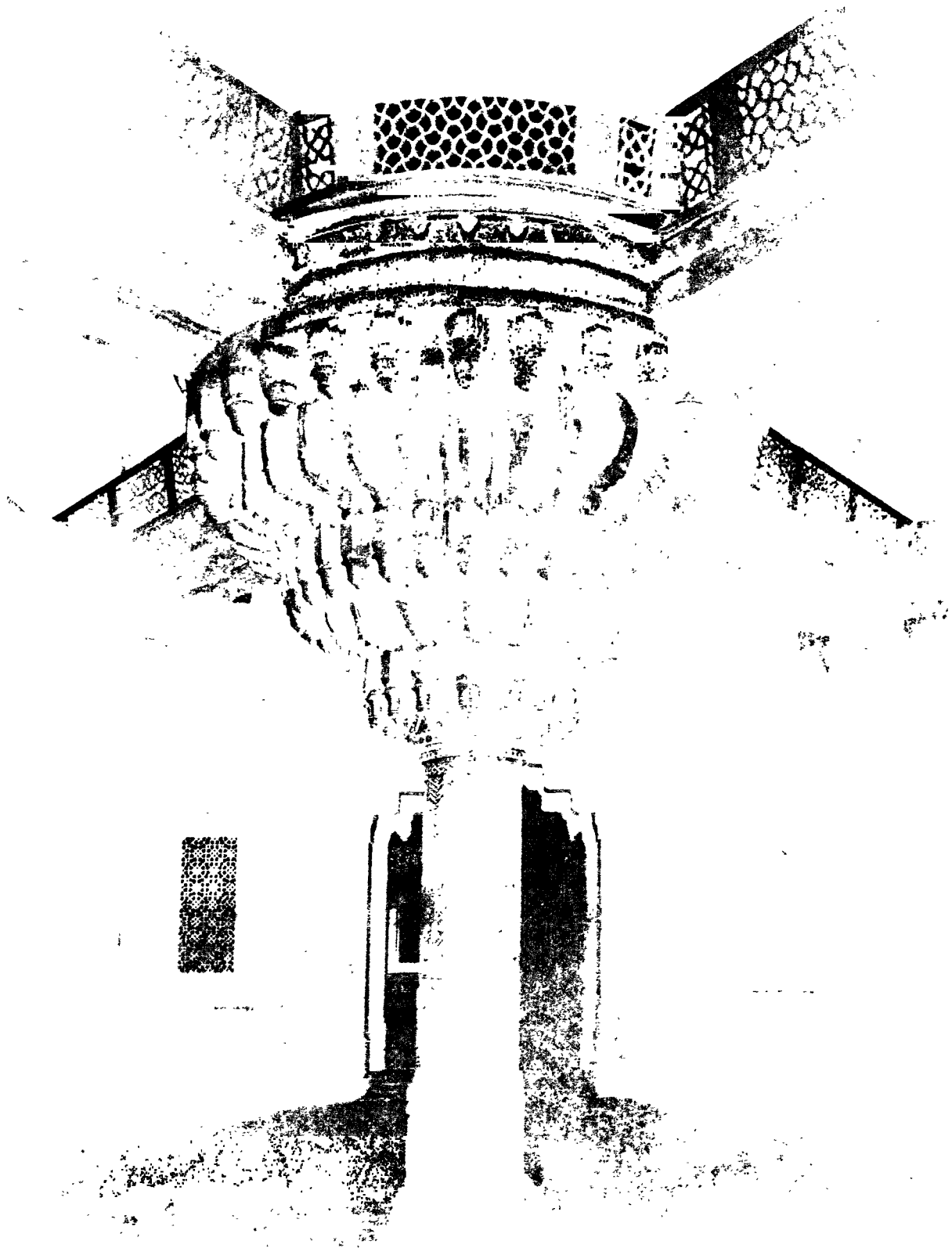
Fatehpur Sikri—Diwan-i-Khas, pillar supporting Akbar's throne.

फतहपुर सीकरी—दीवानेखास – अकबर के सिंहासन के स्तम्भ।

कोणीय ढोलों पर बहुत से गुंवद रखे हुए हैं, और उन ढोलों को ताखदार चित्रित कोनियों के ढांचे संभाले हुए हैं। नीचे की मंज़िल में चार कमरों का एक सेट है। हर कमरा ११ फीट लम्बा चौड़ा है। दीवारें सघनता के साथ खुदी हुई है। इन कमरों के ऊपर एक सपाट पत्थर की पटियों की छत है, जो एक दीवार से दूसरी दीवार तक इकहरे टुकड़ों में खुदी हुई कारनिसों पर रखे हुए हैं और खुदे हुए कोनियों पर आधारित हैं।

पहले फ़र्श पर बरावर आकार के दो कमरे हैं। इनके दरवाज़े दो अटारियों पर खुलते हैं, जो पहले पत्थर की जाली से ढकी हुई थी। ये दोनों पत्थर के डन्डों से बने हुए हिन्दू शैली के दो गुंवदों से ढके हैं। यह वात ध्यान देने योग्य है कि इस इमारत की रचना में लकड़ी का प्रयोग बिल्कुल भी नहीं किया गया था। (यह एक घर प्रतीत नहीं होता, बल्कि लाल पत्थर का बना हुआ एक डिब्बा सा लगता है, जो किसी आबनूस या चन्दन के बक्स के नमूने पर खुदा हुआ और सजा हुआ है)।

राजा बीरबल, जिनके साथ इस इमारत का परंपरागत सम्बन्ध है, एक विद्वान और संस्कृत व्यक्ति थे। कन्धार को युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय वह रास्ते में ही, एक सैनानायक की हैसियत से, सन् १५८६ ईसवी में, वीरगति पा गए। उनकी बुद्धिमानी और हास्य की कथाएँ लोकगाथाओं में समा गई हैं।

हाथी पोल और उस से मिली हुई इमारतें : राजा बीरबल के घर से थोड़ा ही नीचे उतर कर एक सड़क उस झील की ओर जाती है, जो अब सूख गई है। यह सड़क हाथी पोल अथवा हाथी दरवाजे के बीच से होकर गुज़रती है। बाहरी मेहराब पर खड़े हुए ये दोनों हाथी औरंगज़ेब के द्वारा नष्ट करा दिए गए थे।

दो अन्य इमारतें और भी ध्यान देने योग्य है। एक बारूदघर और दूसरी का नाम संगीनबुर्ज है। संगीनबुर्ज एक किले बन्दी की दीवार का बुर्ज है, जो अधूरी छोड़ दी गई थी। इस से ज़रा ही आगे उन जल-यंत्रों की इमारतों के खंडहर हैं, जो सारे शहर की पानी की आवश्यकता को पूरा करते थे। इसके सामने एक कारवान सराय है, जो अब विनष्ट हो गई है।

सब से अन्तिम इमारत का नाम हीरन मीनार है। यह ७२ फ़ीट ऊँची है और हाथी के दांतों की पाषाण आकृतियों से सज्जित है। यह चांदमारी के खेल का स्थान था। कहा जाता है कि इसे अकबर ने अपने एक हाथी की यादगार के रूप में बनवाया था, जो उसे बहुत ही प्रिय था।

सामने के तमाम भाग में, झील के दृश्य के सामने उन मंडपों तथा बाग़ों के ध्वस्त अवशेष हैं, जहाँ दरबारियों के घर थे। वे उस समय के अत्यन्त प्रिय तथा मनोरंजन के स्थान रहे होंगे। आजकल सीकरी एक उजड़ा हुआ स्थान है, किन्तु एक स्थापत्य का विद्यार्थी उस स्थापत्य का अध्ययन करने में महीनों व्यतीत कर सकता है, जिसपर अकबर ने अपने समय और धन का एक भारी अंश व्यय किया था। इनके प्रारम्भिक डिज़ाईन हिन्दू और मुस्लिम, सभी धर्मों के तथा सभी विश्वासों के कारीगरों के द्वारा बनाए गये थे। वे पत्थर में उस प्रकृति के समृद्ध दृश्यों को तराशना चाहते थे, जो उनके चारों तरफ मुक्त होकर बिखरी पड़ी थी।
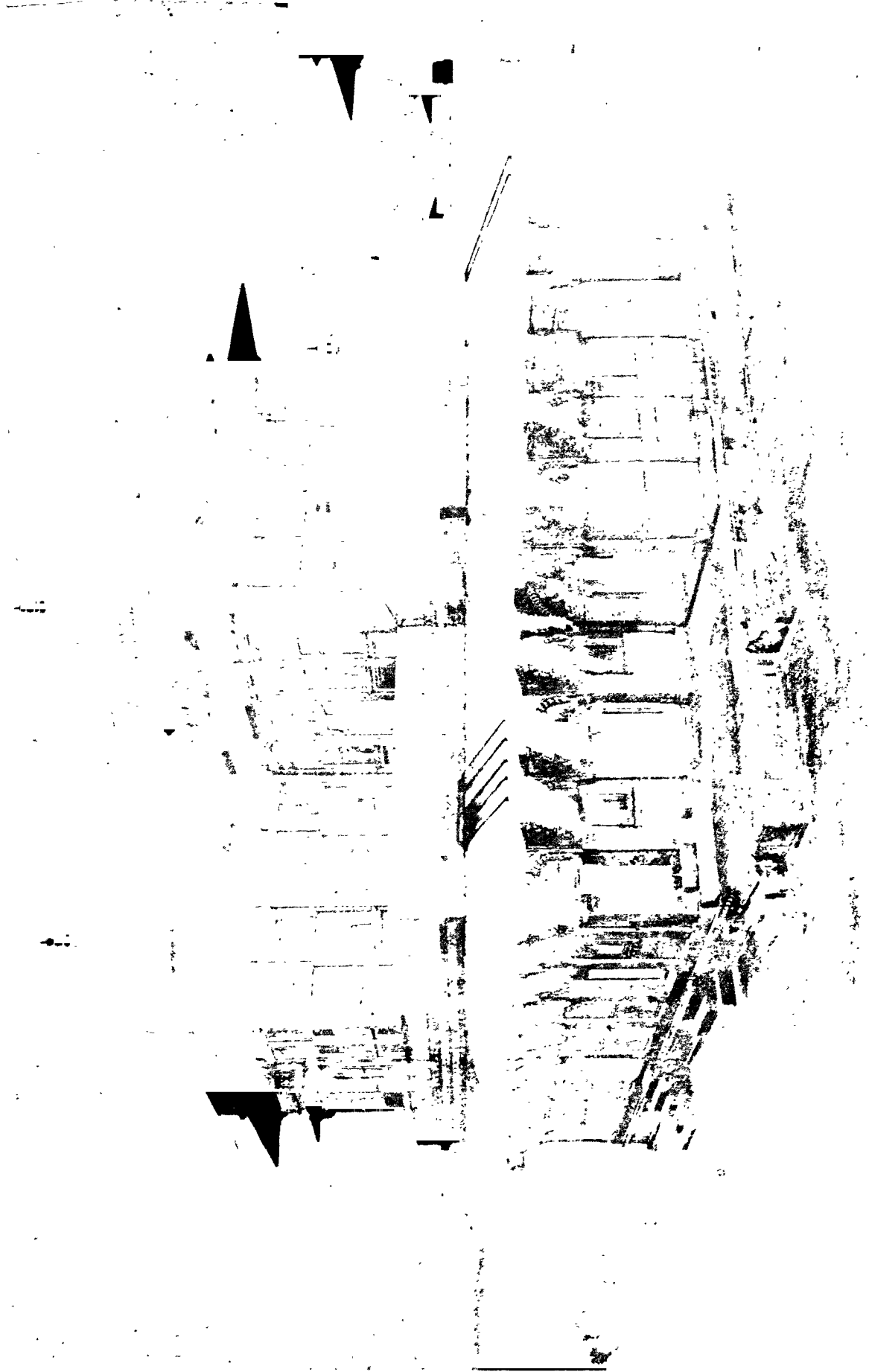
Fatehpur Sikri—The House of Raja Birbal.

फतहपुर सीकरी—राजा बीरबल का निवास स्थान।